आज की खबर आज ही

जनाकांक्षाओं का सजग प्रहरी

चेतना मंच

'युग पुरुष' को श्रद्धांजलि

वर्ष : 26 | अंक : 04 | website:www.chetnamanch.com | नोएडा, सोमवार, 25 दिसंबर, 2023 | Chetna Manch | Chetna Manch | मूल्य 2.00 रुपया | पेज: 8

देश के लिए अटल जी का समर्पण व सेवाभाव प्रेरणास्रोत : प्रधानमंत्री

राष्ट्रपति-उपराष्ट्रपति, पीएम मोदी ने पूर्व पीएम को दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली (एजेंस)। भारतरत्न व पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 99वीं जयंती पर राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़ तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अटल स्मारक पर पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित करके उनको श्रद्धांजलि दी।

इस दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा भी मौजूद थे। केंद्रीय मंत्री अमित शाह, निर्मला सीतारमण, अश्विनी वैष्णव, अनुराग ठाकुर और अन्य नेताओं ने भी पूर्व प्रधानमंत्री को पुष्पांजलि अर्पित की।

इससे पहले पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 'पूर्व प्रधानमंत्री आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी को उनकी जयंती पर देश के सभी परिवारजनों की ओर से मेरा कोटि-कोटि नमन. वे जीवनपर्यंत राष्ट्र निर्माण को गति देने में जुटे रहे। मां भारती के लिए उनका समर्पण और सेवा भाव अमृतकाल में भी प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

वहीं अमित शाह ने एक्स पर लिखा 'पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती पर उनका स्मरण कर उन्हें नमन करता हूं। अटल जी ने नि:स्वार्थ भाव से देश व समाज की सेवा की और भाजपा की स्थापना के माध्यम से देश में राष्ट्रवादी राजनीति को नई दिशा दी। जहां एक ओर उन्होंने परमाणु परीक्षण और कारगिल युद्ध में विश्व को उभरते भारत की शक्ति का एहसास करवाया, तो वहीं दूसरी ओर देश में सुशासन की परिकल्पना को चरितार्थ किया। उनके विराट योगदान को देश हमेशा याद रखेगा।

प्रभु यीशु के जन्मदिन पर चर्च में की प्रेयर

नोएडा (चेतना मंच)। आज क्रिसमस के अवसर पर नोएडा के विभिन्न गिरिजाघरों में ईसाई परिवारों का तांता लगा रहा। लोगों ने प्रभु यीशु की प्रेयर करके विश्व में सभी के सुख, समृद्धि व शांति की कामना की। सेक्टर-29 स्थित 51, 50 तथा सेक्टर-34 के सेंट मेरी चर्चा में सुबह से ईसाई धर्म के लोगों ने पहुंचकर प्रेयर की। इन चर्चा में सुबह से ही बच्चे, बुजुर्ग, महिलाएं तथा युवा लोगों का जमावड़ा रहा। लोगों ने आपस में मिठाई व केक बांटकर प्रभु यीशु का जन्मदिन मनाया।

उधर कल रात में भी सभी चर्चा में काफी संख्या में लोग मौजूद थे तथा रात 12 बजे प्रभु यीशु का जन्म मनाया। प्रार्थना व केरल सिगिंग के साथ लोगों खुशी मनाई व जरूरतमंदों को उपहार बांटे।

जिला कारागार में विचाराधीन बंदी की मौत

नोएडा (चेतना मंच)। लुक्सर स्थित जिला कारागार में निरुद्ध विचाराधीन बंदी युवक की उपचार के दौरान मौत हो गई। आरोपी युवक एक किशोरी के अपहरण व बलात्कार के मामले में गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था।

जेवर के आर आर कॉलोनी ग्राम रोई निवासी (28 वर्षीय) राहुल पुत्र राजपाल के खिलाफ किशोरी को अपहरण कर उसके साथ बलात्कार किए जाने के आरोप में गिरफ्तार का जेल भेजा गया था। बीती रात्रि राहुल की अचानक तबीयत खराब हो गई। तबीयत खराब होने पर उसे जेल परिसर में बने अस्पताल में ले जाया गया। गंभीर हालत को देखते हुए राहुल को उपचार के लिए ग्रेटर नोएडा के जिम्स अस्पताल में भर्ती कराया गया। उपचार के दौरान राहुल की मौत हो गई। अस्पताल से सूचना मिलने पर थाना ईकोटेक वन पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। मृतक के परिजनों को भी इस मामले की जानकारी दे दी गई है। युवक की मौत किस वजह से हुई इस मामले में पुलिस व जेल के अधिकारी चुप्पी साधे हुए हैं।

सड़क हादसों में सिपाही सहित तीन की मौत

नोएडा (चेतना मंच)। थाना सेक्टर-126 क्षेत्र के मयूर गोल चक्कर के पास आज तडके तेज गति में जा रही फोर्ड वैगन कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। इस हादसे में कार सवार तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए इनमें से एक व्यक्ति की मौत हो गई। वहीं अलग-अलग स्थान पर हुए सड़क हादसे में घायल हुए कांस्टेबल व युवक ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। थाना सेक्टर-126 प्रभारी सुबोध कुमार ने बताया कि आज तडके करीब 3 बजे मयूर गोल चक्कर पर सड़क हादसा होने की सूचना मिली। सूचना के आधार पर मौके पर पहुंची पुलिस टीम को एक फोर्ड वैगन कार क्षतिग्रस्त मिली। कार सवार तीनों लोग गंभीर रूप से घायल थे। पुलिस ने तीनों को उपचार के लिए जेपी अस्पताल में भर्ती कराया। उपचार के दौरान लखनऊ निवासी तुषार चौधरी पुत्र तरुण चौधरी की मौत हो गई जबकि उसका साथी शुभम व मौसेरी बहन का उपचार चल रहा है। (शेष पृष्ठ-4 पर)

रिटायर्ड मेजर की संपत्ति के दस्तावेज हड़पे, तीन लोगों पर मुकदमा दर्ज

नोएडा (चेतना मंच)। सेना से रिटायर्ड मेजर ने थाना सेक्टर-20 में तीन लोगों के खिलाफ घर में आकर प्रॉपर्टी सहित अन्य दस्तावेजों को चोरी करने के आरोप में मुकदमा दर्ज कराया है।

सेक्टर-28 निवासी रिटायर्ड मेजर त्रिलोकीनाथ शर्मा ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि सेवानिवृत होने के बाद वह मारिया एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड में निदेशक बना था। उसी कंपनी में रविंद्र कुमार मौर्य व दुर्गा देवी मारिया भी कंपनी के नाम नोएडा अथॉरिटी ने एक औद्योगिक प्लांट सेक्टर-57 में अलॉट किया था कुछ समय बाद रविंद्र कुमार मौर्य की मृत्यु हो गई थी। नोएडा अथॉरिटी ने वर्ष 1994 में उक्त प्लाट का अलॉटमेंट रद्द कर दिया था। इसको लेकर इलाहाबाद उच्च न्यायालय में आज भी वाद लंबित है। उन्होंने बताया कि अपनी मृत्यु से पूर्व रविंद्र कुमार मारिया ने कंपनी का हस्तांतरण उसके नाम कर दिया था जिससे कंपनी के न्यायालय प्राधिकरण आदि में चल रहे परिवाद की वह पैरवी कर सके।

रिटायर्ड मेजर त्रिलोकी नाथ शर्मा के मुताबिक 26 जून 2022 को रविंद्र कुमार मारिया का बेटा ललित कुमार मारिया अपने साथी राजीव चड्ढा और चरणजीत के साथ उनके घर पहुंचा। इन लोगों ने कंपनी के कागजात प्रॉपर्टी के कागजात और न्यायालय तथा प्राधिकरण में चल रहे केस के कागजात देखने के लिए मांगे। इन लोगों को वह तमाम कागजात देकर चाय लेने के लिए भीतर चले गए। कुछ देर बाद जब वह लौटे तो तीनों जा चुके थे और सभी दस्तावेज गायब थे। उन्होंने इस संबंध में कई बार ललित कुमार मारिया को फोन किया तो उसने फोन नहीं उठाया। इसके बाद जब वह (शेष पृष्ठ-4 पर)

किशोरी ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

नोएडा (चेतना मंच)। थाना फेस-2 क्षेत्र के नंगला चरणदास गांव में एक (16 वर्षीय) किशोरी ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मौके से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ है। नंगला चरणदास गांव में विनोद पासवान अपने परिवार के साथ रह रहे हैं। बीती शाम वह परिवार सहित बाहर गए हुए थे। घर में उनकी 16 वर्षीय बेटी संध्या अकेली थी। कुछ समय बाद जब वह घर वापस लौटे तो उन्हें संध्या फांसी के फंदे पर लटकी हुई मिली। उन्होंने पड़ोसियों की मदद से संध्या को फंदे से नीचे उतरा और अस्पताल लेकर पहुंचे जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। अस्पताल से सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। (शेष पृष्ठ-4 पर)

आरडब्ल्यूए अध्यक्ष ने दी जान से मारने की धमकी, मामला दर्ज

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। शहर के पी-4 सेक्टर के आरडब्ल्यूए अध्यक्ष हरेन्द्र नागर ने एक पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी दी है। हरेन्द्र नागर ने अपने तीन पुत्रों के साथ मिलकर पड़ोसी के साथ मारपीट तथा गाली-गलौज भी की है। बीटा-2 थाने की पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करके मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

ग्रेटर नोएडा के बीटा-2 थाने में दर्ज कराई गई रिपोर्ट में सुधांशु तिवारी ने कहा है कि मैं सुधांशु तिवारी पुत्र सुरेन्द्र नाथ तिवारी निवासी ए-118, सेक्टर पी-4 ग्रेटर नोएडा में रहता हूँ। मेरे पड़ोस में मकान न0 ए-122 के सामने पार्क में हरेन्द्र नागर एवं उसके कुछ साथी शराब पी रहे थे। समय लगभग रात्रि 8:45 बजे का रहा होगा। मेरी पत्नी जागृति तिवारी, निधि, प्रिया शर्मा ने शराब पीने पर आपत्ति की तो हरेन्द्र नागर निवासी ए-105, ने महिलाओं के साथ गाली-गलौज व अपशब्द तेज-तेज आवाज में प्रारम्भ कर दिया। (शेष पृष्ठ-4 पर)

युवक का शव बरामद

नोएडा (चेतना मंच)। थाना जारचा क्षेत्र के चौना गांव के पास नहर से एक व्यक्ति का शव बरामद हुआ है। मृतक की पहचान नहीं हो पाई है। थाना प्रभारी सुनील कुमार ने बताया कि किसी व्यक्ति ने सूचना दी कि चोना गांव के पास नहर में एक व्यक्ति का शव पड़ा हुआ है। सूचना के आधार पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को बाहर निकलवाया और उसकी पहचान करने का प्रयास किया लेकिन सफलता नहीं मिल पाई। मृतक की उम्र करीब (35 वर्ष) के आसपास है। उन्होंने आशंका जताई कि संभवत: युवक का शव पीछे से बहकर आया है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर आसपास के थाना क्षेत्र की पुलिस को सूचना दे दी गई है। मृतक की पहचान कराने का प्रयास किया जा रहा है।

सेक्सवर्धक दवाइयों का इस्तेमाल कर पति करता है शारीरिक शोषण

विवाहिता ने थाने में दर्ज कराई रिपोर्ट

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा से एक नवविवाहिता का दिलचस्प मामला सामने आया है। ग्रेटर नोएडा में अपनी नवविवाहित बीवी को संतुष्ट करने के लिए एक युवक न केवल सेक्स पॉवर बढ़ाने की दवाओं का सेवन करता है बल्कि नशीली दवाओं का सेवन करने के बाद ही बेडरुम में प्रवेश करता है और शारीरिक व मानसिक रुप से प्रताड़ित करता है। परेशान विवाहिता ने पुलिस से शिकायत कर आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

मामला ग्रेटर नोएडा के थाना सूरजपुर क्षेत्र का है। सूरजपुर थाने पर दी गई शिकायत में यूनिटेक होराइजन पाई टू निवासी एक युवती ने बताया कि वह एक कंपनी में काम करती थी, जहां पर उसकी मुलाकात आदित्य कुमार ठाकुर से हुई थी। (शेष पृष्ठ-4 पर)

महाकौथिग मेले से युवती का मोबाइल उड़ाया

नोएडा (चेतना मंच)। सेक्टर-21 से स्थित रामलीला ग्राउंड में लगे महाकौथिग मेले में घूमने आई एक युवती का चोरों ने मोबाइल फोन चोरी कर लिया। चोरों ने मोबाइल फोन से 5000 रूपये पेटीएम द्वारा ट्रांसफर कर लिए। सेक्टर-21 जलवायु विहार निवासी मानसी बंसल ने पुलिस की दी शिकायत में बताया कि वह बीते 22 दिसंबर की शाम को नोएडा स्टेडियम में लगे महाकौथिग मेले में घूमने के लिए आई थी।वह एक दुकान पर खरीदारी कर रही थी। इस दौरान एक लड़के ने उसके पास से मोबाइल फोन चोरी कर लिया। चोरी किए गए (शेष पृष्ठ-4 पर)

विभिन्न स्थानों से पांच बदमाश दबोचे

चोरों के 9 मोबाइल, दो बाइक व हथियार बरामद

नोएडा (चेतना मंच)। पुलिस ने मोबाइल लूट व चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले पांच बदमाशों को अलग-अलग स्थान से गिरफ्तार किया है। इनके पास से पांच मोबाइल फोन दो बाइक तमंचा कारतूस बच्चा को बरामद हुए हैं।

थाना सेक्टर-24 प्रभारी विवेक श्रीवास्तव ने बताया कि पुलिस टीम गश्त पर थी। इस दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि काले रंग की स्प्लेंडर बाइक पर सवार दो युवक किसी घटना को अंजाम देने के इरादे से घूम रहे हैं। सूचना के आधार पर पुलिस ने चौड़ा गांव से बाहर निकल रहे बाइक सवार दोनों

युवकों को दबोच लिया। तलाशी में उनके पास से पांच मोबाइल फोन बरामद हुए। पूछताछ में पकड़े गए युवकों ने अपना नाम दीपक कोठारी पुत्र किशन निवासी ग्राम बनारसी व सचिन पुत्र सतीश निवासी टीचर्स कॉलोनी जनपद बुलंदशहर बताया। दोनों आरोपियों ने कबूल किया कि उक्त मोबाइल फोन चोरी के हैं (शेष पृष्ठ-4 पर)

युवती से छेड़छाड़ करने पर लगाई पिटाई

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। यवुती को घर में अकेला देखकर कर दबंग युवक जबरन घर में घुस आए और छेड़छाड़ की। इस बात का विरोध करने पर आरोपियों ने युवती व उसके भाई के साथ मारपीट कर उन्हें घायल कर दिया। थाना जारचा में दर्ज कराई रिपोर्ट में शबनम (काल्पनिक नाम) ने बताया कि वह बीते 22 दिसंबर को घर में अकेली थी। इस दौरान पड़ोस में रहने वाले समीर सोनू सोहल व समीर जबरन उसके घर में घुस आए और उसके साथ छेड़छाड़ करने लगे। उसने इस बात का विरोध करते हुए शोर मचाया तो उसका भाई अयान (शेष पृष्ठ-4 पर)

संदिग्ध परिस्थितियों में दो किशोरियां लापता

नोएडा (चेतना मंच)। थाना सेक्टर-49 क्षेत्र के सलारपुर से आठवीं कक्षा में पढ़ने वाली दो किशोरियां संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई। वही थाना सेक्टर-63 क्षेत्र के छिजारसी से पड़ोस में रहने वाला एक युवक किशोरी को पहले फुसलाकर भगा ले गया।

शिवनगर कॉलोनी सलारपुर निवासी रमेश (काल्पनिक नाम) ने पुलिस से की शिकायत में बताया कि उसकी (13 वर्षीय) बेटी आठवीं कक्षा में पढ़ती है। बीते 22 दिसंबर की शाम को वह अपनी सहपाठी के यहां गई थी इसके बाद में वापस नहीं लौटी। परिजनों ने जब जांच पड़ताल की तो पता चला कि उनकी बेटी तथा उसकी सहेली दोनों ही लापता है।

बेटी लापता, अपहरण का आरोप

वहीं थाना सेक्टर-63 क्षेत्र में रहने वाले परमवीर (काल्पनिक नाम) ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि बीते 21 दिसंबर के सुबह उसके 18 वर्ष से बेटी घर से बिना बताए चली गई । उन्होंने पड़ोस में रहने वाले इकबाल पर अपहरण का आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस का कहना है कि किशोरियों की तलाश की जा रही है।

परिजनों की शिकायत पर थाना सेक्टर-49 पुलिस ने अपहरण का मामला दर्ज कर लिया है।

तकनीकी के साथ-साथ छात्रों को आत्यात्मिक ज्ञान भी जरूरी : नवाब सिंह नागर

नोएडा (चेतना मंच)। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता तथा उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री नवाब सिंह नागर ने कहा कि छात्रों को पठनीय, तकनीकी व बौद्धिक ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान देना भी आज की प्रासंगिकता है। इससे हजारों होनहारों को अपने संस्कार व आध्यात्म की जानकारी हासिल होती है। वे आज सेक्टर-62 स्थित मोहन इंटरनेशनल स्कूल के वार्षिकोत्सव में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

आज नोएडा सेक्टर 62 स्थित मोहन इंटरनेशनल स्कूल द्वारा वार्षिकोत्सव समारोह मनाया गया। प्रकृति के पंचतत्व पृथ्वी, जल, आकाश, वायु, अग्नि की महत्ता एवं इसकी रक्षा कैसे करें, विषय पर बच्चों ने नृत्य व नाट्य रूपांतरण के द्वारा सुंदर तरीके (शेष पृष्ठ-4 पर)

पीजी से 2 लैपटॉप चोरी किए

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना बीटा-2 क्षेत्र के सेक्टर अल्फा-2 स्थित पीजी से युवती ने दो लड़कियों का लैपटॉप चोरी कर लिया। चोरी की पूरी वारदात पीजी में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। सेक्टर अल्फा दो में बने पीजी में रहने वाली आयुषी कुमारी ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि बीते 18 दिसंबर की रात्रि को वह तथा उसके रूममेट छत पर खाना खाने के लिए गए थे। कुछ देर बाद जब वह वापस लौटे तो उन्हें कमरे का दरवाजा खुला हुआ (शेष पृष्ठ-4 पर)

RADIANT ACADEMY
(AFFILIATED TO CBSE)
B-180, sector-55, noida Ph: 120-4314312/ 6514636
Mob. : 9350251631/ 9674710772 E-mail: radiantacademynoida@yahoo.com
RADIANT ACADEMY
(J.H.S.) (AFFILIATED TO CBSE)
Sorkha, Sector- 115, noida on Fng Ph: 120- 6495106,
Mob. : 9873314814/ 9674710772 E-mail: radiantacademysorkha@yahoo.com
Let your child Explore the world with us in a Secure Environment!
We are a Co-Educational Medium Senior Secondary School imparting quality education since the last 20 years.
FROM ADMISSION OPEN NURSERY TO CLASS XI Transport Facility Available
FACILITIES AVAILABLE AT SCHOOL : ●Highly Qualified And Trained Faculty well Quipped Labs ●CCTV Controlled Environment ●Activity Based Learning ● Well Equipped Library ●GPS Enable Buses

ISHWAR PHYSIO CARE
At Home Physiotherapy for an Active Life
Physical Therapy for :
▸ Back & Neck Pain
▸ Arthritis
▸ Post Stroke
▸ Sports Injury
▸ Fracture Rehabilitation
▸ Joint Pain
▸ Pain Management Through Electro Therapy
Home Visit Only

Dr. Ankur Sharma (PT)
Up state medical council Registered (Lucknow)
+919990144473

कोरोना की 'लहर' नहीं

कोरोना वायरस के कुछ मामले जरूर आ रहे हैं, लेकिन यह कोई 'लहर' नहीं है। महामारी की सुनामी नहीं है। जो भयानक मंजर हम देख और झेल चुके हैं, एकदम उसकी वापसी भी नहीं है। वायरस की एक नई नस्ल भारत में भी है-जेएन-वन। यह बीए-2-86 या पिरोला का ही एक और प्रकार है, जो ओमिक्रॉन वायरस के ही प्रकार हैं। उन्हीं की कतार में जेएन-1 है। आज इसके संक्रमण का विस्तार 40 देशों में बताया जा रहा है। हमारे देश में गुरुवार, 21 दिसंबर तक कुल 2669 संक्रमित मामले दर्ज किए जा चुके हैं। उनमें से 2300 से अधिक अकेले केरल में हैं। अभी तक सिर्फ 6 मौतें भी दर्ज की गई हैं, जिनमें से 3 केरल में हुई हैं। बाकी महाराष्ट्र, कर्नाटक, पंजाब में दर्ज की गई हैं। पिछले दौर में भारत संक्रमण के हजारों मामले रोजाना देख चुका है। कुछ बड़े अस्पतालों में संक्रमित मरीजों की सांसें ऑक्सीजन की कमी के कारण टूटी थीं। वैसे मंजर की संभावनाएं नहीं हैं, क्योंकि वायरस की यह नस्ल उतनी घातक नहीं है। हम अपने पाठकों को आश्वस्त कर सकते हैं कि लॉकडाउन के आसार नगण्य हैं। एक-दूसरे राज्य में आने-जाने पर अभी कोई पाबंदी नहीं है। मास्क पहनना भी अनिवार्य नहीं किया गया है। अलबत्ता इतना आग्रह जरूर किया जा रहा है कि यदि आप भीड़ वाले इलाके में जाएं, तो मास्क पहन लें। यदि आपकी उम्र 60 साल से अधिक है और आप हृदय, लिवर, गुर्दे, मधुमेह आदि बीमारियों के पुराने मरीज हैं, तो भी मास्क पहन कर भीड़-भाड़ वाले बाजार या क्षेत्र में जाएं। कोरोना वायरस को लेकर हम अब कोई ढील नहीं बरत सकते, लिहाजा केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने राज्यों और संघशासित क्षेत्रों को परामर्श भेजा है कि अस्पतालों में पूरी तैयारियां रखें। ऑक्सीजन सिलेंडर भरे हों। आईसीयू की व्यवस्था चाक-चौबंद हो और मॉक ड्रिल करके देख लें कि तमाम बंदोबस्त हो गए हैं अथवा नहीं। इन परामर्शों से आप चिंतित न हों और दहशत के कोई भी आसार भी न हों। लेकिन इनसे साबित होता है कि कोरोना वायरस अब भी जिंदा है, वायरस कभी नहीं मरते, उनकी नस्लें संक्रमण फैलाती रहती हैं। अमरीका जैसा विकसित देश भी कोरोना-मुक्त नहीं हो पाया, यह वायरस के अस्तित्व के कारण ही है। वैसे सबसे पहले अगस्त, 2023 में यह वायरस लक्समबर्ग में पाया गया। उसके बाद इंग्लैंड, आइसलैंड, फ्रांस और अमरीका में इसके मामले दर्ज किए गए। इन देशों में जीनोम निगरानी काफी सक्रिय है, लेकिन अन्य वायरस की तुलना में जेएन-1 अप्रभावी है। चिकित्सकों की सलाह है कि जिनमें इम्युनिटी कम है या दबी हुई है, ऐसे बुजुर्ग लोग मास्क से अपना बचाव कर सकते हैं। सांस से संबंधी सभी वायरस, कोरोना समेत, के लिए अच्छी किस्म के मास्क काफी बचाव कर सकते हैं, लेकिन दहशत का कोई कारण नहीं है। सचेत जरूर रहें। ऑमिक्रॉन की जितनी भी नस्लें हैं, वे डेल्टा की तरह संक्रामक नहीं हैं। वे ज्यादा लोगों को संक्रमित कर सकती हैं, लेकिन उनसे मौतें बहुत कम होंगी। चिकित्सक यह भी मानते हैं कि जिन्होंने कोरोना के टीके की दोनों खुराक ली हैं, वे मौजूदा वायरस से भी व्यक्ति का बचाव कर सकती हैं। वे आज भी प्रभावी हैं। सर्दी का मौसम गहराने लगा है। आगे क्रिसमस त्योहार और नववर्ष के समारोह भी हैं। जाहिर है कि उनमें भीड़ जरूर आएगी, लिहाजा उसका बचाव जरूर करें। कहीं ऐसा न हो कि आनंद के उत्सव आपको बीमार ही कर दें। बेशक कोरोना की कोई 'लहर' नहीं है और न ही वायरस घातक है, लेकिन अगले कुछ दिन तक संक्रमण के आंकड़े आपके सामने जरूर आते रहेंगे। उनसे घबराना नहीं है। यह वायरस का सार्वजनिक प्रभाव है। यदि आपको थोड़ा-सा भी बुखार होता है, तो कोरोना के दौर वाला व्यवहार ही करें। खुद को दूसरों से अलग और दूरी पर रखें। बेहतर होगा कि आप मास्क पहनें।

यूपी में राज्यसभा और विधान परिषद चुनाव में बीजेपी नये चेहरों पर लगा सकती है दांव

आम चुनाव से पूर्व उत्तर प्रदेश में अगले वर्ष अप्रैल में राज्यसभा की भी 10 सीटों पर और मई में विधान परिषद की 13 सीटों पर चुनाव होगा। इसके अलावा लखनऊ पूर्वी की एक विधान सभा सीट पर भी चुनाव होना है। यहां के भाजपा विधायक गोपाल जी टंडन की हाल ही में मृत्यु हो गई थी। पार्टी के एक उच्च पदस्थ सूत्र का कहना है कि विधान परिषद की कुल 18, राज्यसभा की 10 और लोकसभा की 80 सीटों पर चुनाव से पार्टी नए नेतृत्व को मौका देने की शुरुआत करेगी। इनके जरिये पार्टी प्रदेश में अगड़े, पिछड़े, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्ग में अपनी नई लीडरशिप भी तैयार करेगी। पार्टी जिन्हें फिर से विधान परिषद, लोकसभा या राज्यसभा जाने का मौका नहीं देगी, उन्हें भी संगठन से जुड़ी कोई न कोई जिम्मेदारी दी जाएगी। जातीय समीकरण साधते हुए इन सीटों पर नए चेहरों को मौका दिया जाएगा। इसके अलावा इसमें महिला और युवाओं की संख्या बढ़ाई जाएगी। टिकट पाने वालों में पंचायतीराज और नगरीय निकाय संस्थाओं के जनप्रतिनिधि, सहकारी संस्थाओं में चुने हुए प्रतिनिधि, पार्टी के पूर्व व वर्तमान पदाधिकारी भी शामिल होंगे।

बहरहाल, आम चुनाव तो अगले वर्ष के मध्य से कुछ पूर्व होना है, परंतु इससे पूर्व बीजेपी को कुछ और चुनावों का भी सामना करना है। कुछ दिनों के भीतर सबसे पहले पूर्व लखनऊ पूर्व विधान सभा सीट पर चुनाव होना है। यह सीट बीजेपी विधायक गोपाल जी टंडन की मौत के बाद खाली हुई है। आम चुनाव से पूर्व इस सीट को जीतने के लिए बीजेपी ने पूरी ताकत लगा दी है। वह नहीं चाहती है कि यह सीट उसके हाथ से निकल जाये। यदि यहां बीजेपी हार गई तो इसका गलत मैसेज आम चुनाव में भी जायेगा। इसी के साथ कुछ महीनों के भीतर यूपी में राज्यसभा और विधान परिषद की कुछ रिक्त सीटों के लिए भी चुनावी बिसात सजेगी। बता दें कि राज्यसभा में उत्तर प्रदेश के कोटे की 10 सीटों का कार्यकाल आम चुनाव से पहले 2 अप्रैल, 2024 को खत्म हो जायेगा। वहीं, विधान परिषद में भी विधायक कोटे की 13 सीटें 5 मई को खाली हो जाएंगी। इसलिए, लोकसभा चुनाव की रणनीति बनाने के साथ बीजेपी एवं अन्य दलों को इन सीटों का गुणा-भाग भी दुरुस्त करना पड़ेगा। यूपी कोटे की राज्यसभा की जो 10 सीटें खाली हो रही हैं, उसमें फिलहाल 9 सीटों पर भाजपा का कब्जा हैं। सपा से एक मात्र सीट जया बच्चन की खाली होगी। चुनाव आयोग अगले वर्ष मार्च में इसके लिए चुनाव कार्यक्रम घोषित कर सकता है। वहीं, विधान परिषद में खाली हो रही 13 सीटों में 10 भाजपा, एक उसके सहयोगी अपना दल और 1-1 सपा और बसपा के पास है। 5 मई के पहले इन सीटों पर भी चुनाव प्रस्तावित है।

विधानसभा की मौजूदा सदस्य संख्या के हिसाब से राज्यसभा से एक प्रत्याशी जिताने के लिए 37 वोट की जरूरत होगी। सपा के पास 109 और रालोद के पास 9 विधायक हैं। ऐसे में 118 विधायकों के साथ सपा कम से कम तीन सीटें जीतने की स्थिति में होगी।

बात राज्य सभा की जो दस सीटें रिक्त हो रही हैं, उसके बारे में की जाये तो इसमें से एक सीट पर मार्च 2018 को हुए राज्यसभा चुनाव में सपा ने जया बच्चन को मैदान में उतारा था और वह चुनाव जीत गई थीं। वहीं एक अन्य सीट पर 2019 के लोकसभा चुनाव के पहले मायावती से दोस्ती का हाथ बढ़ाने की कोशिश में लगी सपा ने बसपा उम्मीदवार भीमराव आंबेडकर को समर्थन दिया था। हालांकि, क्रॉस वोटिंग व संख्या गणित में भाजपा भारी पड़ी और उसने अपने 9 उम्मीदवार जिता लिए थे। सपा से जया बच्चन तो चुनाव जीत गईं, लेकिन बसपा से भीमराव हार गए थे। 2022 के चुनाव के बाद विधानसभा के बदले गणित के चलते इस बार भाजपा के लिए सभी सीटों को बचा पाना मुश्किल होगा, जबकि सपा के पास राज्यसभा में संख्या बढ़ाने का मौका होगा।

बता दें कि विधानसभा की मौजूदा सदस्य संख्या के हिसाब से राज्यसभा से एक प्रत्याशी जिताने के लिए 37 वोट की जरूरत होगी। सपा के पास 109 और रालोद के पास 9 विधायक हैं। ऐसे में 118 विधायकों के साथ सपा कम से कम तीन सीटें जीतने की स्थिति में होगी। सत्तारुढ़ गठबंधन के पास कुल 279 (भाजपा-254, अपना दल (एस)-13, निषाद पार्टी-6, सुभासपा-6) विधायक हैं। ऐसे में 7 सीटों पर उसकी जीत लगभग तय है। इसके अलावा कांग्रेस के पास 2, जनसत्ता दल के पास 2 व बसपा के पास एक विधायक है। जनसत्ता दल का समर्थन आम तौर पर भाजपा को रहता है। पिछले विधान परिषद चुनाव में कांग्रेस व बसपा ने किसी भी दल के प्रत्याशी का समर्थन नहीं किया था। हालांकि, लोकसभा चुनाव के लिए पक्ष और विपक्ष दोनों ओर नए दोस्तों को जोड़ने-तोड़ने की कोशिशें चल रही है। ऐसे में चुनाव के समय तक दोस्ती व निष्ठा के टिकने-डिगने के आधार पर संख्या व समीकरण आगे-पीछे हो सकता है।

गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश विधान परिषद में इस समय कांग्रेस का कोई भी सदस्य नहीं है। ऐसा पहली बार हुआ है। पिछले साल जुलाई में कांग्रेस पहली बार यूपी के विधान परिषद में शून्य पर पहुंच गई थी। कांग्रेस की स्थिति में फिलहाल आगे भी सुधार होते नहीं दिख रहा है। यही स्थिति इस बार मई में विधान परिषद में बसपा की भी हो सकती है। वह भी शून्य पर पहुंच जाये तो किसी को आश्चर्य नहीं होगा। उसके पास केवल एक विधायक है और इस आधार पर उसका उम्मीदवार पर्चा भी नहीं भर सकता, क्योंकि नामांकन के लिए भी 10 प्रस्तावक की जरूरत होती है। विधानसभा के मौजूदा गणित के हिसाब से विधान परिषद में एक प्रत्याशी जिताने के लिए 29 विधायक की जरूरत पड़ेगी। अगर सत्तापक्ष और विपक्ष अपने मौजूदा सभी सहयोगियों को चुनाव होने के समय तक साथ रखने में सफल रहते हैं तो भाजपा गठबंधन कम से कम 9 और सपा-रालोद गठबंधन 4 सीटें जीतने की स्थिति में होगा। इसका एक बड़ा फायदा सपा के लिए यह होगा कि एक बार फिर वह विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष की सीट की दावेदार हो जाएगी। परिषद में अभी उसके 9 सदस्य हैं और नेता प्रतिपक्ष के लिए जरूरी 1/10 सदस्य के मानक से वह एक पीछे है। 5 मई को खाली हो रही सीटों के हिसाब से सपा की सदस्य संख्या घटकर 8 रह जाएगी। सपा के पास अपने 109 विधायक हैं। ऐसे में कम से कम 3 सीट वह अपने दम पर भी जीतने की स्थिति में है। लिहाजा, परिषद में उसका दहाई में जाना तय है और उसे नेता प्रतिपक्ष का पद वापस मिल जाएगा।

भाजपा के जिन राज्यसभा सदस्यों का कार्यकाल पूरा हो रहा है उसमें अनिल अग्रवाल, अशोक वाजपेयी, अनिल जैन, कांता कर्दम, सकलदीप राजभर, जीवीएल नरसिम्हा राव, विजय पाल तोमर, सुधांश त्रिवेदी, हरनाथ सिंह यादव और सपा की जया बच्चन शामिल हैं। इसी प्रकार विधान परिषद में जिन नेताओं का कार्यकाल खत्म होने वाला है उसमें भाजपा के यशवंत सिंह, विजय बहादुर पाठक, विद्या सागर सोनकर, सरोजनी अग्रवाल, अशोक कटारिया, अशोक धवन, बुक्कल नवाब, महेंद्र कुमार सिंह, मोहसिन रजा, निर्मला पासवान शामिल हैं। वहीं अपना दल (एस) के आशीष पटेल, सपा के नरेश चंद्र उत्तम और बसपा के भीमराव आंबेडकर शामिल हैं।

-अजय कुमार

रामचरित मानस

कल के अंक में आपने पढ़ा था कि न किसी से वैर करे, न लड़ाई-झगड़ा करे, न आशा रखे, न भय ही करे। उसके लिए सभी दिशाएँ सदा सुखमयी हैं। जो कोई भी आरंभ (फल की इच्छा से कर्म) नहीं करता, जिसका कोई अपना घर नहीं है (जिसकी घर में ममता नहीं है), जो मानहीन, पापहीन और क्रोधहीन है, जो (भक्ति करने में) निपुण और विज्ञानवान है॥ उससे आगे का वर्णन क्रमानुसार प्रस्तुत है।

प्रीति सदा सज्जन संसर्गा। तृन सम बिषय स्वर्ग अपबर्गा॥
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई। दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई॥

संतजनों के संसर्ग (सत्संग) से जिसे सदा प्रेम है, जिसके मन में सब विषय यहाँ तक कि स्वर्ग और मुक्ति तक (भक्ति के सामने) तृण के समान हैं, जो भक्ति के पक्ष में हठ करता है, पर (दूसरे के मत का खण्डन करने की) मूर्खता नहीं करता तथा जिसने सब कुतर्कों को दूर बहा दिया है॥

दो0-मम गुन ग्राम नाम रत गत ममता मद मोह।
ता कर सुख सोइ जानइ परानंद संदोह॥

जो मेरे गुण समूहों के और मेरे नाम के परायण है, एवं ममता, मद और मोह से रहित है, उसका सुख वही जानता है, जो (परमात्मारूप) परमानन्दराशि को प्राप्त है॥

सुनत सुधा सम बचन राम के । गहे सबनि पद कृपाधाम के॥
जननि जनक गुर बंधु हमारे। कृपा निधान प्रान ते प्यारे॥

श्रीरामचन्द्रजी के अमृत के समान वचन सुनकर सबने कृपाधाम के चरण पकड़ लिए (और कहा-) हे कृपानिधान! आप हमारे माता, पिता, गुरु, भाई सब कुछ हैं और प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं॥

तनु धनु धाम राम हितकारी। सब बिधि तुम्ह प्रनतारति हारी॥
असि सिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ। मातु पिता स्वारथ रत ओऊ॥

और हे शरणागत के दुःख हरने वाले रामजी! आप ही हमारे शरीर, धन, घर-द्वार और सभी प्रकार से हित करने वाले हैं। ऐसी शिक्षा आपके अतिरिक्त कोई नहीं दे सकता। माता-पिता (हितैषी हैं और शिक्षा भी देते हैं) परन्तु वे भी स्वार्थपरायण हैं (इसलिए ऐसी परम हितकारी शिक्षा नहीं देते)॥

हेतु रहित जग जुग उपकारी। तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी॥
स्वारथ मीत सकल जग माहीं। सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं॥

हे असुरों के शत्रु! जगत में बिना हेतु के (निःस्वार्थ) उपकार करने वाले तो दो ही हैं- एक आप, दूसरे आपके सेवक। जगत में (शेष) सभी स्वार्थ के मित्र हैं। हे प्रभो! उनमें स्वप्न में भी परमार्थ का भाव नहीं है॥

क्रमशः

युवा बनाएंगे विकसित भारत

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और वैश्विक साझेदारी' (जीपीएआई) पर शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि एआई 21वीं सदी में विकास का सबसे बड़ा जरिया बन सकती है। ऐसे में भारतीय युवाओं में शीघ्र ही एआई कम्प्यूटरिंग क्षमता को बढ़ाने का व्यापक अभियान शुरू किया जाएगा, जिसके तहत देशभर में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) के मौजूदा नेटवर्क का इस्तेमाल टीयर 2 और टीयर 3 शहरों में युवाओं को एआई कौशल सिखाने में भी होगा। इससे देश की नई पीढ़ी स्टार्टअप और नवाचार को बढ़ाते हुए मानवीय मूल्यों के साथ देश के तेज विकास के लिए आगे बढ़ेगी। इसी तरह 11 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशभर के राजभवनों में आयोजित 'विकसित भारत / 2047 = युवाओं की आवाज कार्यक्रम' को वर्चुअली संबोधित करते हुए युवाओं को संदेश दिया कि यह भारत का अमृतकाल है और भारत के इतिहास का ऐसा कालखंड है जब देश की नई पीढ़ी राष्ट्र निर्माण के संकल्प को मुट्ठी में लेकर लंबी छलांगे लगाते हुए 2047 तक देश को विकसित भारत बनाने के सपने को साकार कर सकती है। गौरतलब है कि नीति आयोग की ओर से 10 दिसंबर को देश के विकास पर एक परिपत्र जारी करते हुए कहा गया है कि केंद्र सरकार की ओर से जिस तरह प्रधानमंत्री कौशल विकास, समग्र शिक्षा, जनधन योजना, स्टार्टअप इंडिया और उच्च व तकनीकी शिक्षा के विस्तार कार्यक्रम सफलतापूर्वक आगे बढ़ाए गए हैं, उनसे भारत डिजिटल कौशल से सुसज्जित नई पीढ़ी और तेज आर्थिक विकास के दम पर 2027 में दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था और 2047 में 30 खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनते हुए विकसित देश बनते हुए दिखाई दे सकेगा।

यकीनन इन दिनों प्रकाशित हो रही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों में एकमत से डिजिटल कौशल और तेज आर्थिक विकास के कारण युवाओं के लिए देश और विदेश में रोजगार के मौके बढ़ने और वैश्विक मंदी की चुनौतियों के बीच भारत के तेजी से विकास की ओर बढ़ रही डगर रेखांकित हो रही है। जहां देश अपने पास दुनिया की सर्वाधिक 6.5 फीसदी विकास दर रखते हुए रोजगार के नए अवसर निर्मित करते हुए दिखाई दे रहा है, वहीं तेजी से बढ़ती देश की अर्थव्यवस्था की अहमियत को समझते हुए दुनिया के उद्यमियों और प्रवासी भारतीयों के कदम भी भारत की ओर बढ़ रहे हैं। हाल ही में सिंगापुर फिनटेक फेस्टिवल में हिस्सा लेते हुए उद्योग संगठन नैस्कॉम के पूर्व चेयरमैन सौरभ श्रीवास्तव ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है और देश की विकास गाथा में शामिल होने के लिए अमेरिका और यूरोप सहित दुनिया भर से भारतीय उद्यमी वापस

अपनी मातृभूमि की ओर लौट रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि हाल ही में ब्रिटेन के राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार भारतीय कुशल श्रमिकों, डॉक्टरों और छात्रों ने ब्रिटेन की वीजा सूची में अपनी ऊंचाई कायम रखी है। जुलाई 2022 से जून 2023 के एक वर्ष में सबसे ज्यादा भारतीयों को ही ब्रिटेन का वीजा मिला है। रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2021 से 2022 के बीच भारतीयों को स्किल्ड वर्कर्स वीजा में करीब 63 फीसदी की बढ़ोतरी उभरकर सामने आई है। स्किल्ड वर्कर्स वीजा स्कीम के तहत विदेशों से आईटी इंजीनियर, सॉफ्टवेयर डेवलपर विभिन्न ब्रांचों के इंजीनियर, नर्स, फार्मासिस्ट, केयर टेकर आदि शामिल हैं।

आगामी चार वर्षों तक ब्रिटेन में स्किल्ड वर्कर्स की मांग तेजी से बढ़ेगी। इसी तरह हाल ही में प्रकाशित ब्लूमबर्ग की नई रोजगार रिपोर्ट के मुताबिक इजरायल सरकार ने एक लाख भारतीय युवाओं को इजराइल में नौकरी के लिए भारत सरकार से अनुमति मांगी है। इसी तरह भारत और ताइवान के बीच नौकरियों को लेकर एक अहम समझौता अतिशीघ्र ही होने की उम्मीद है। इस समझौते के तहत ताइवान में भारत के एक लाख श्रमिकों को नौकरी मिलेगी।

दरअसल ताइवान में बेरोजगारी दर न्यूनतम स्तर पर पहुंच गई है। उसे मैन्युफैक्चरिंग, स्वास्थ्य और कृषि क्षेत्र में बड़ी संख्या में श्रमिकों की जरूरत है, जो उसे अपने देश में नहीं मिल रहे हैं। ऐसे में ताइवान ने इस परिप्रेक्ष्य में भारत की तरफ समझौते के हाथ बढ़ाए हैं। ज्ञातव्य है कि श्रमिकों की मोबिलिटी को लेकर भारत का जापान, आस्ट्रेलिया, फ्रांस समेत 13 देशों के साथ समझौता हो चुका है। इनमें से ज्यादातर देश आबादी के बूढ़े होने की समस्या से कौशल प्रशिक्षित नई पीढ़ी के श्रमिकों की भारी कमी का सामना कर रहे हैं। इन दिनों पूरी दुनिया में अर्थविशेषज्ञ एवं जनसंख्या विशेषज्ञ यह टिप्पणी करते हुए दिखाई दे रहे हैं कि सर्वाधिक युवा आबादी वाला भारत चीन की तरह अपनी युवा आबादी को गुणवत्तापूर्ण एवं नए दौर के डिजिटल कौशल से सुसज्जित कर दुनिया की नई आर्थिक शक्ति बन सकता है।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) के द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक एक अरब 42 करोड़ 86 लाख आबादी के साथ भारत दुनिया का सर्वाधिक आबादी वाला देश बन गया है। जबकि दूसरे स्थान पर चीन की इस रिपोर्ट के मुताबिक युवा आबादी के मामले में भारत की स्थिति चीन से अच्छी है। जहां इस समय भारत की करीब 50 फीसदी आबादी 25 साल में कम उम्र की है, वहीं 25.4 करोड़ आबादी 15 से 24 वर्ष के आयु वर्ग में है। भारत की 66 प्रतिशत आबादी 35 साल से कम उम्र की है। यूएनएफपीए की भारत में प्रतिनिधि आंद्रिया वोजनार ने कहा कि भारत के 1.4 अरब से अधिक नागरिकों को 1.4 अरब से अधिक अवसरों के रूप में देखा जाना चाहिए।

सबसे अधिक युवाओं वाला देश नवोन्मेष, नवाचार और समस्याओं के हल खोजने का स्रोत बन सकता है। ऐसे में नई पीढ़ी को देश और दुनिया में बढ़ती हुई रोजगार की नई संभावनाओं के मद्देनजर अच्छी अंग्रेजी, कम्प्यूटर-आईटी दक्षता, कोडिंग स्किल्स, कम्युनिकेशन स्किल्स, जनसंचार, वेब डिजाइन, कौशल बाजार अनुसंधान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ऑटोमेशन, क्लाउड कम्प्यूटिंग, मशीन लर्निंग, डेटा साइंस जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियों से भी सुसज्जित किया जाना होगा। अब देश में स्किल इंडिया डिजिटल से कौशल, शिक्षा और उद्यमशीलता के लिए डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना का पूरा लाभ लेते हुए नई पीढ़ी के लिए अधिक से अधिक रोजगार अवसर निर्मित किए जाने होंगे। साथ ही देश में इस वर्ष 2023-24 से शुरू प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4.0 के माध्यम से देश के युवाओं को निर्धारित किए गए तकनीक क्षेत्रों में बड़ी संख्या में कौशल और प्रशिक्षण से सुसज्जित करके रोजगार की डगर पर आगे बढ़ाना होगा।

निश्चित रूप से भारत के ये आर्थिक आधार विकसित भारत की संभावनाओं के आधार हैं। विकसित देश बनने के लिए 2047 तक लगातार करीब 7 से 8 फीसदी की दर से बढना होगा। हम उम्मीद करें कि जिस तरह 11 और 12 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के अमृतकाल में नई पीढ़ी को विकास के लिए लंबी छलांग लगाने के जो मंत्र सौंपे हैं, उनके मद्देनजर देश के युवा और शासन-प्रशासन समन्वित रूप से दुनिया में सामर्थ्यवान भारत की तस्वीर बनाते हुए आगे बढेंगे और वर्ष 2047 तक देश विकसित देश के रूप में रेखांकित होता हुआ दिखाई देगा।

-डा. जयंती लाल भंडारी
विख्यात अर्थशास्त्री

राशिफल

मार्गशीर्ष शुक्ल-चतुर्दशी | (विक्रम संवत् 2080)

मेष- (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)
स्वास्थ्य की स्थिति सुधार की तरफ, प्रेम-संतान भी अच्छा और व्यापार भी अच्छा है।

वृष- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे , वो)
स्वास्थ्य पहले से बेहतर रहेगा। प्रेम-संतान थोड़ा मध्यम, व्यापारिक दृष्टि से सही समय कहा जाएगा।

मिथुन- (का, की, कु, घ, ड , छ, के, हो, हा)
चली आ रही परेशानी थोड़ी दूर होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। प्रेम-संतान की स्थिति मध्यम हो जाएगी।

कर्क- (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डा)
स्वास्थ्य के मामले में कमजोरी का सामना करना पड़ेगा। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। प्रेम-संतान की स्थिति अच्छी रहेगी।

सिंह- (मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टु, टे)
यात्रा में लाभ होगा। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य अच्छा, प्रेम-संतान मध्यम और व्यापार बहुत अच्छा है।

कन्या- (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)
स्वास्थ्य अभी बहुत अच्छा नहीं है। व्यापारिक स्थिति सुदृढ़ होगी। रोजी-रोजगार में तरक्की करेंगे।

तुला- (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, त)
परिस्थितियां अनुकूल हो चुकी है। धीरे-धीरे अच्छे दिनों की तरफ बढ़ रहे हैं आप, यात्रा में लाभ होगा।

वृश्चिक- (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू)
बचकर पार करें। जोखिम भरा समय है। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। प्रेम-संतान भी मध्यम है और व्यापार भी मध्यम है।

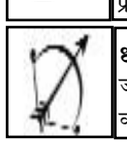

धनु- (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ठा, भे)
जीवनसाथी का भरपूर सहयोग मिलेगा। नौकरी-चाकरी की स्थिति सुदृढ़ होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

मकर- (भो, जा, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खू, खे, गा, गी)
शत्रुओं पर भारी पड़ेंगे। कार्य रुक-रुककर चलने लगेगा। प्रेम-संतान की स्थिति पहले से बेहतर और व्यापार बहुत अच्छा रहेगा।

कुम्भ- (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, षो, द)
महत्वपूर्ण निर्णय अभी रोककर रखें। स्वास्थ्य अच्छा है। प्रेम-संतान मध्यम है। व्यापार की दृष्टि से शुभ समय है।

मीन- (दी, दु, झ, ध, दे, दो, च, चा, चि)
भूमि और वाहन की खरीदारी संभव है। भौतिक सुख-संपदा में वृद्धि, प्रेम-संतान अच्छा, व्यापार भी अच्छा, लेकिन गृह-कला से बचें।

जयंती पर सपाइयों ने चौधरी चरण सिंह को किया याद

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच) भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एवं किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह की जयंती गत शनिवार को सूरजपुर स्थित समाजवादी पार्टी जिला कार्यालय पर किसान दिवस के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा उन्हें को पुष्पांजलि अर्पित कर और उनके जीवन पर विचार गोष्ठी का आयोजन कर उन्हें याद किया।

इस मौके पर पार्टी के जिलाध्यक्ष सुधीर भाटी ने चौ. चरण सिंह के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि चौधरी चरण सिंह किसानों के सच्चे शुभचिंतक थे, उनकी नीति गरीब और किसानों को ऊपर उठाने की थी। उनका मत था कि बगैर किसानों को खुशहाल किए देश का विकास नहीं हो सकता। उन्होंने हमेशा किसानों की समस्या को गंभीरता से लेते हुए उन्हें हल कराने का सार्थक प्रयास किया। चौधरी चरण सिंह ने किसान को मजबूत बनाने के लिए उनके हितों को सदैव सर्वोपरि रखा और किसान की प्रगति में अहम योगदान दिया।

उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह समाजवादी विचारधारा से जुड़े वह क्रांतिकारी नेता थे जिन्होंने आजादी से पहले भारत को अंग्रेजों से आजाद कराने के लिए और बाद में भारत से गरीबी मिटाने के लिए संघर्ष किया।

इस मौके पर पूर्व विधान परिषद सदस्य एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता महेश आर्य ने कहा कि चौधरी चरण सिंह ने पूरा जीवन सादगी के साथ और गरीबों की सेवा करते हुए जिया। उनका ध्येय किसानों को आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर बनाने था।

उन्होंने किसान और आम जनता के हित में कई कदम उठाए। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव चौधरी चरण सिंह के पदचिन्हों पर चलते हुए की गरीब, किसान, मजदूर के उत्थान के लिए काम कर रहे है। इस अवसर पर मुख्य रूप से लोकसभा प्रभारी बीरसिंह यादव पूर्व जिलाध्यक्ष इन्दर प्रधान, राष्ट्रीय सचिव अधिवक्ता सभा रामशरण नागर, महेश भाटी, मिंटी खारी, अमित रौनी, अकबर खान, अवनीश भाटी, युनस प्रधान, रोहित मत्ते गुर्जर, हैप्पी पंडित, अनूप तिवारी, अनीस अहमद, गजेंद्र यादव, राशिद खां, जावेद अंसारी, उपेंद्र यादव, रोहित नागर, सोनू भाटी आदि मौजूद रहे।

रोटरी क्लब ने लगाया ब्लड डोनेशन कैंप

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)।

रोटरी क्लब के पूर्व अध्यक्ष कपिल गुप्ता ने बताया रोटरी क्लब ग्रेटर नोएडा द्वारा रावन डी जे ग्रुप के सहयोग से एक ब्लड डोनेशन कैम्प कल (रविवार) को बाबा ढुका हरकिशन ठेकेदार की बैठक बिसरख ग्रेटर नॉएडा में लगाया गया।

कैम्प में बहुमूल्य 26 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ 12 लोग हीमोग्लोबिन कम होने के कारण ब्लड डोनेट नहीं कर पाये । कैम्प में महिलाओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। एक यूनिट ब्लड से तीन लोगो की जान बचाई जा सकती हे।ब्लड डोनेट करने से शरीर में किसी तरह की कोई समस्या नहीं होती है।

कैम्प में कपिल शर्मा, मुकुल गोयल, कपिल गुप्ता, मोहित भाटी , वीजेंद्र , अतुल भाटी , शिवानी , शकुन्तला देवी, नेहा, सुमित भाटी, अंकित पहलवाल आदि लोग उपस्थित रहे।

विज्ञान मेले का आयोजन

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। दुजाना पब्लिक स्कूल बादलपुर में विज्ञान मेले का आयोजन किया गया विज्ञान मेलों का उद्देश्य युवा पीढ़ी में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण करना है ताकि उन्हें विज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाज की अन्योन्याश्रयता का एहसास हो सके उम्मीद संस्था के संस्थापक एवं संयोजक डॉक्टर देवेंद्र कुमार नागर तथा किसान नेता राजकुमार रूपवास अपने मुख्य अतिथि के तौर पर विज्ञान मेले में पहुंचकर बच्चों का उत्साह वर्धन किया। उन्होंने बताया कि विज्ञान प्रदर्शनी से बच्चों में विषय की अच्छी जानकारी होती है। जिससे बच्चे परीक्षा में अच्छे अंक लाने के साथ-साथ बच्चों में वैज्ञानिक सर्जन आत्मकता एवं प्रयोगात्मकता को बढ़ावा मिलता है। बच्चों के द्वारा प्रोजेक्ट बनाने में वेस्ट मटेरियल का प्रयोग किया गया।

इस प्रकार के आयोजन प्रत्येक विद्यालय में समय-समय पर होते रहनी चाहिए जिससे बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है इस मौके पर मुख्य रूप से विद्यालय प्रबंधक राहुल नागर, मास्टर बालचंद, मास्टर ब्रह्म सिंह, मास्टर विकास,मास्टर मोजी राम, किसान नेता राजकुमार रूपवास, डॉक्टर देवेंद्र कुमार नागर, परमानंद शर्मा तथा विद्यालय परिवार के समस्त छात्र में छात्राएं तथा शिक्षक गण उपस्थित रहे।

हर्ष व्याप्त

नोएडा (चेतना मंच)। सेक्टर-151 में जेपी अमन सोसायटी में एओए के चुनाव होने के लगभग एक साल से ज्यादा के इंतजार करने के पश्चात गत शनिवार को रजिस्ट्रेशन हो गया। इसकी सूचना मिलने के बाद अमन वासियों में हर्ष है। यह जानकारी एओए के अध्यक्ष योगेश सिंह ने दी है।

समाधान कार्यक्रम आयोजित

भदोही(चेतना मंच)। ऊंज थाना में समस्या समाधान आयोजित हुआ। इस अवसर पर समस्याओं का निस्तारण हेतु राकेश कुमार सिंह थाना प्रभारी व अनिल तिवारी राजस्व निरीक्षक तथा व भाजपा के विधि विभाग के सह संयोजक अधिवक्ता आनन्द कुमार शुक्ल मौजूद रहे।

किसान सभा की हुई बैठक

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)।

अखिल भारतीय किसान सभा की जिला कमेटी की बैठक ग्राम जुनपत में आयोजित हुई।

बैठक की अध्यक्षता किसान सभा के संयोजक वीर सिंह नागर ने की किसान सभा के जिला अध्यक्ष डॉ रुपेश वर्मा ने मीटिंग में उपस्थित कमेटी सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि 16 सितंबर को किसान सभा ने 4 महीने के दिन रात के धरना प्रदर्शन के परिणाम में प्राधिकरण के साथ समझौता हुआ था। समझौते के अनुसार 31 अक्टूबर तक बोर्ड बैठक बुलाकर किसानों के मसलों को हल किया। अब बैठक 28 दिसंबर को होगी।

पूजा यादव की पुस्तक 'दादी को जादू आता था' का हुआ विमोचन

मिर्जापुर (चेतना मंच)। पूजा यादव की पुस्तक दादी को जादू आता था का विमोचन विंध्येश्वरी साहित्य मंच, मिर्ज़ापुर के तत्वावधान में घंटाघर परिसर में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नगरपालिका अध्यक्ष श्याम सुंदर केसरी व मंचासीन अतिथियों ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गणेश गंभीर ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार भोलानाथ कुशवाहा, अ.भा.सा.प. मिर्ज़ापुर के अध्यक्ष राजपति ओझा, वरिष्ठ कवि लल्लू तिवारी, डॉ. रमाशंकर सिंह यादव और पूर्व एसो. प्रोफे. मंगला प्रसाद पाण्डेय मंचासीन रहे। कार्यक्रम का संचालन श्याम अचल ने किया।

विमोचन कार्यक्रम का प्रारंभ माँ सरस्वती की प्रतिमा पर मंचासीन अतिथियों ने माल्यार्पण करके किया। विमोचन के उपरान्त अपने वक्तव्य में मुख्य अतिथि ने कहा कि पूजा यादव जैसी बेटी आगे बढ़ रही हैं और अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को रास्ता दिखा रही हैं।

अध्यक्ष गणेश गंभीर ने कहा कि कविता एक सांस्कृतिक यात्रा है। भोलानाथ कुशवाहा ने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण है पूजा यादव की कविताओं में आज की सामाजिक स्थिति का जिक्र हर जगह मिलता है।

पुस्तक के बारे में बोलते हुए मंगला प्रसाद पाण्डेय ने दादी को जादू आता है की कविताओं की प्रसंशा की और कहा उसमें आज का समय झलकता है। लल्लू तिवारी ने कहा कि मिर्ज़ापुर की नई प्रतिभा के रूप में पूजा यादव का उभरना सुखद है। दादी को जादू आता था की लेखिका पूजा यादव को मुख्य अतिथि व मंचासीन अतिथियों ने हिंदी श्री सम्मान से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में शिव प्रकाश साहित्य, डॉ. रंजना जायसवाल, डॉ. अनुराधा ओस, डॉ सुधा सिंह, सारिका चौरसिया, शुभम श्रीवास्तव, इला जायसवाल, अशोक प्रेमी, नंदिनी वर्मा, सृष्टि राज, आनंद अमित, हसन जौनपुरी आदि ने कविताएं पढ़ीं।

इस अवसर पर डॉ. रमाशंकर शुक्ल, शिव लाल अवस्थी, वीरेंद्र कुमार यादव प्रधान, सुनील कुमार यादव, धर्मराज, विष्णु देव पाण्डेय, नरेंद्र कुमार, प्रसून चौरसिया, दिलीप, सेवालाल प्रजापति, सलीम आदि उपस्थित रहे।

नवधन गांव में हुई संकल्प यात्रा को लेकर बैठक

भदोही (चेतना मंच)। डीघ ब्लॉक के ग्राम सभा नवधन में विकसित भारत संकल्प यात्रा का कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विपूल दूबे विधायक ज्ञानपुर, विशिष्ट अतिथि आनन्द कुमार शुक्ल जिला सह संयोजक विधि विभाग भाजपा, प्रेम शंकर तिवारी जिला मंत्री भाजपा, निलम गुप्ता पूर्व जिला उपाध्यक्ष भाजपा, कार्यक्रम संयोजक खंड विकास अधिकारी दीलिप कुमार, एडीयो पंचायत एवं नागेन्द्र शुक्ल सेमराधनाथ मंडल संयोजक व मनोज मिश्र डीघ ब्लॉक समिति के सदस्य प्रमुख, मंडल उपाध्यक्ष निरज मिश्र, ग्राम प्रधान कृष्ण मुरारी आदि लोग उपस्थित रहे।

काव्य गोष्ठी का आयोजन

भदोही (चेतना मंच)।

भाजपा के जिला अध्यक्ष दीपक मिश्रा ने बताया कि आज चित्रांगना लान ज्ञानपुर में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के जन्मदिवस के अवसर पर एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम एवं काव्य गोष्ठी के मुख्य अतिथि जिला प्रभारी नागेंद्र सिंह रघुवंशी उपस्थित रहेंगे। यह जानकारी भाजपा के जिला मीडिया प्रभारी गोवर्धन राय ने दी है।

उत्तर मध्य रेलवे G20

निविदा सूचना संख्याः- ए.जी.सी.-ई.एल.जी.-टी.-33-2023-24 दिनांकः 22.12.2023

ई-निविदा सूचना

वरि0 मंडल विद्युत इंजीनियर (सामान्य), आगरा द्वारा भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य हेतु केवल ऑन लाईन (E-Tendering) द्वारा खुली निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्रम सं: 01	टेन्डर नं0: AGC-ELG-T-33-2023-24

कार्य का नाम लोकेशन सहित एवं कार्य पूर्ण करने की अवधिः आगरा कैंट में ट्रैक मशीन सैटेलाइट डिपो के लिए विद्युतीकरण कार्य

पूर्ण करने की अवधि -06 माह, कार्य की अनुमानित लागतः₹ 5485383.27/- (including GST) पूरी जानकारी एवं टेन्डर में भाग हेतु Indian Railways website www.ireps.gov.in देखें। टेन्डरर्स केवल वेब पोरटल Indian Railways website www.ireps.gov.in पर 15:00 बजे तक दि0 15.01.2024 तक टेन्डर डाल सकते है। 2095/23(DG)

North central railways @CPRONCR @northcentralrailway www.ncr.indianrailways.gov.in

घर से टीवी व अन्य सामान चोरी

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना दादरी क्षेत्र के सेक्टर ओमिक्रॉन- 2 में चोरों ने एक मकान का ताला तोड़कर एलइडी टीवी, एसी व अन्य सामान चोरी कर लिया। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

सेक्टर ओमिक्रॉन- 2 के सी ब्लॉक में रहने वाले मुनेंद्र यादव ने बताया कि बीते दिनों वह परिवार सहित बाहर गए हुए थे। कुछ समय बाद जब वापस लौटे तो उन्हें घर का ताला टूटा हुआ मिला। घर के भीतर जाने पर पता चला कि चोर एक एलइडी टीवी, 2 टन का एसी, गैस सिलेंडर व अन्य सामान को चोरी कर ले गए हैं। थाना प्रभारी ने पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच पड़ताल की जा रही है।

युवती व युवक से मोबाइल लूटे

नोएडा (चेतना मंच)। अलग-अलग स्थानों पर बाइक सवार बदमाशों ने एक युवती व युवक से मोबाइल फोन लूट लिए।

मूल रूप से बरेली निवासी देवयानी उपाध्याय ने थाना सेक्टर-49 में दर्ज रिपोर्ट में बताया कि वह बीते 22 दिसंबर की रात्रि को सेक्टर-52 मेट्रो स्टेशन से ई-रिक्शा में बैठकर गौर सिटी की तरफ जा रही थीं। इस दौरान पीछे से बाइक पर आए 2 बदमाशों ने उसके हाथ से मोबाइल फोन छीन लिया और फरार हो गए।

वहीं थाना सेक्टर-24 में सेक्टर-35 निवासी पवनेश्वर दत्त राय ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि बीते 15 दिसंबर की रात्रि को सुरभि अस्पताल के पास बाइक सवार दो बदमाशों ने उसका मोबाइल फोन लूट लिया और मौके से फरार हो गए उसने शोर मचाकर बदमाशों को पकड़ने का प्रयास किया लेकिन वह हत्थे नहीं चढ़े। पुलिस का कहना है कि पीड़ितों की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है और घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरो की फुटेज को खंगाला जा रहा है।

कार्यालय नगर पालिका परिषद, दादरी (गौतमबुद्धनगर)

पत्रांकः-1837/निर्माण/न0पा0परि0दा0/2023-24 दिनांकः23/12/2023

-: ई-निविदा सूचना :-

नगर पालिका परिषद, दादरी (गौतमबुद्धनगर) द्वारा जिलाधिकारी महोदय, गौतमबुद्धनगर के पत्रांक-904/एल0बी0सी0, दिनांक 07.10.2023 की स्वीकृति के क्रम में नगर पालिका परिषद, दादरी (गौतमबुद्धनगर) द्वारा विभिन्न वार्डों में 15वां वित्त आयोग की टाईड ग्रान्ट के अन्तर्गत 04 निर्माण/विकास कार्यों की ई-निविदा उत्तर प्रदेश की ई-प्रिक्योरमेन्ट की बेवसाईट www.etender.up.nic.in के माध्यम से स्वायत्त निकाय/पब्लिक सेक्टर विभाग / राज्य सरकार / केन्द्र सरकार / अन्य सरकारी विभाग में ई0/ डी0 श्रेणी में कार्य की लागत के सीमा के अनुरूप ठेकेदारों / फर्मों से प्रतिशत आधार दरों पर दिनांक 11.01.2024 को समय सांय 04.00 बजे तक ऑमत्रित की जाती है। निविदादाता किसी एक कार्य अथवा सभी कार्यों के लिए ई-निविदा दे सकता है। ई-निविदाओं का विस्तृत विवरण-निविदा प्रपत्र, निविदा शुल्क एवं नियम-शर्ते आदि उत्तर प्रदेश की ई-प्रिक्योरमेन्ट की बेवसाईट www.etender.up.nic.in पर उपलब्ध रहेगा। यदि ई-निविदा खोलने की तिथि को सक्षम अधिकारी की अनुपलब्ता होने के कारण या सार्वजनिक अवकाश घोषित होने पर ई-निविदा अगले कार्यदिवस में खोली जायेंगी।

निविदा की समय सारणी (www.etender.up.nic.in पर)		
1.	वेबसाइट पर ई-निविदा प्रकाशन की तिथि / समय	दिनांक 27.12.2023 को अपरान्ह 02.00 बजे से
2.	ई-निविदा डाउनलोड/अपलोड की प्रारम्भ तिथि / समय	दिनांक 27.12.2023 को अपरान्ह 02.00 बजे से
3.	ई-निविदा डाउनलोड/अपलोड की अन्तिम तिथि / समय	दिनांक 11.01.2024 को सायं 04.00 बजे तक
4.	ई-निविदा की तकनीकी बिड खोलने की तिथि / समय	दिनांक 11.01.2024 को सायं 05.00 बजे से

नोटः- ई-निविदा संशोधन की सूचना/जानकारी हेतु ई-प्रिक्योरमेन्ट की बेवसाईट www.etender.up.nic.in बेबसाईट को लगातार देखते रहें।

अधिशासी अधिकारी
नगर पालिका परिषद,
दादरी (गौतमबुद्धनगर)

अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद,
दादरी (गौतमबुद्धनगर)

दैनिक चेतना मंच

भगवान हनुमान बजरंग बली के अवतार श्री बालाजी (मेंहदीपुर) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में समर्पित है।

डाक पंजी. सं. L-10/GBD-574/99

RNI No. 69950/98

स्वामी मुद्रक प्रकाशक रामपाल सिंह रघुवंशी ने बीएफएल इन्फोटेक लि. सी-9, सेक्टर-3, नोएडा, गौतमबुद्धनगर (यू पी.) से छपवाकर, ए-131 सेक्टर-83, नोएडा से प्रकाशित किया।

संपादक-रामपाल सिंह रघुवंशी

Contact:
0120-2518100,
4576372, 2518200
Mo.: 9811735566,
8750322340

E-mail:
chetnamanch.pr@gmail.com
raghuvanshirampal365@gmail.com
raghuvanshi_rampal@yahoo.co.in
www.chetnamanch.com

साहित्यकारों ने किया काव्य पाठ, कई पुस्तकों का विमोचन

साहित्यकार समाज की दशा को परिलक्षित करता है: कैप्टन विकास गुप्ता

नोएडा (चेतना मंच)। अंकुर साहित्य परिवार द्वारा रविवार को भावांजलि उत्सव कार्यक्रम का आयोजन नोएडा सेक्टर 29 स्थित नोएडा मीडिया क्लब के सेमिनार हॉल में संपन्न हुआ। बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित कैप्टन विकास गुप्ता, राज्य मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार (चेयरमैन, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद) एवं बतौर विशिष्ट अतिथि लेखक, कवि एवं पत्रकार डॉ चेतन आनंद एवं गजलकार सैदा आराई द्वारा भावांजलि उत्सव में विभिन्न साहित्यकारों को अवार्ड प्रदान किया गया।

अंकुर काव्य रत्न सम्मान चंद्र स्वरूप बिसरिया, डॉ. मिथिलेश कुमार श्रीवास्तव शिखर, डॉ. राम कुमार झा निकुंज, नीलम हस्तीर को प्रदान किया गया। अर्जुन साहित्य श्रेष्ठ अवार्ड डॉ. अशोक को तथा कविवर गोपाल दास नेपाली साहित्य शिरोमणि अवार्ड एस पी दीक्षित को तथा साहिब-ए-ग़ज़ल सम्मान राजेश मेहरोत्रा राज को एवं खुशबू-ए-गजल अवार्ड सुनीता सोनू को प्रदान किया गया। कवि एवं पत्रकार डॉ. चेतन आनंद तथा डॉ. शैदा आराई को महाकवि डॉ. कुंवर बेचैन साहित्य सम्मान तथा राज्य मंत्री कैप्टन विकास गुप्ता को नागरिक सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया। श्रेष्ठ काव्य प्रस्तुति हेतु अनूप मिश्रा एवं रश्मि जावला को श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान से नवाजा गया।

काव्य पाठ के क्रम में कविराज शर्मा ने याददाश्त कमजोर होती जा रही है उम्र बढ़ती जा रही है सुनाया तो दिल्ली पुलिस के एसीपी जितेंद्र कुमार ने आंधी न सही तूफान न सही हवा का एक झोंका ही काफी है जीवन के लिए सुनाकर वाहवाही लूटी।

भावांजलि उत्सव कार्यक्रम के दौरान मंचासीन अतिथियों ने विभिन्न साहित्यकारों चंद्र स्वरूप बिसरिया की पुस्तक नींद हमारी ख्वाब तुम्हारे तथा भींगा दर्द, डॉ. मिथिलेश कुमार श्रीवास्तव शिखर की सच्ची कहानियों पर आधारित मासूम और दरिंदे पुस्तक, डॉ राम कुमार झा निकुंज के दोहा संग्रह पुस्तक यायावार एवं मधुमिता, डॉ अशोक की पांच पुस्तकों अरुणिमा, काकतंडी, प्रदीप, ब्रह्मकमल, नरगिस का विमोचन संपन्न हुआ। इसी क्रम में नीलम हस्तीर की पुस्तक चलो बुलावा आया है पुस्तकों तथा साझा संग्रह भावांजलि, एक चमन के फूल हम, शरहदें व शहादतें एवं बज्म ए हिंद का विमोचन भी मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा किया गया।

उक्त भावांजलि कार्यक्रम का संयोजन अंकुर साहित्य परिवार के संपादक निर्मेश त्यागी वत्स एवं साहित्य संपादक सुनीता सोनू ने तथा कार्यक्रम का कुशल संचालन रोहित मिश्र एवं यादवेंद्र आर्य ने किया। कार्यक्रम के संयोजन में समाजसेवी रचना जैन एवं मनीष जैन का विशेष सहयोग रहा।

मुख्यमंत्री ने किया अटल जी की प्रतिमा का अनावरण

लखनऊ (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को लोक भवन प्रांगण में पूर्व प्रधानमंत्री 'भारत रत्न' श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृतियों को याद किया। उन्होंने कहा कि अटल जी भारत की राजनीति के अजात शत्रु थे। उन्होंने भारत की राजनीतिक अस्थिरता को उभारने के साथ देश के अंदर राजनीति में शुचिता और पारदर्शिता का एक आदर्श प्रतिमान रखा था। पिछले साढ़े नौ वर्षों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने विकास, सुरक्षा और सुशासन के जो नये प्रतिमान स्थापित किये हैं, उसकी आधारशिला श्रद्धेय अटल जी ने अपने शासनकाल में ही रख दी थी। आगरा के बटेश्वर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अटल जी की प्रतिमा का अनावरण भी किया।

भागवत कथा समापन पर पहुंचे सांसद विधायक व भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष

जेवर (चेतना मंच)। जेवर क्षेत्र के गांव भवोकरा में श्रीमद् भागवत कथा के अंतिम दिन रविवार को भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष सतेन्द्र सिसौदिया, स्थानीय सांसद व जेवर विधायक का भाजपा कार्यकर्ताओं ने गले में फुल माला डालकर जोरदार स्वागत किया।

मुख्य अतिथि व भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष सतेन्द्र सिंह सिसौदिया रविवार को भाजपा किसान मोर्चा के जिला मंत्री प्रेम वीर प्रधान द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के समापन पर पहुंचे जहां पूर्व मंत्री व स्थानीय सांसद डॉ महेश शर्मा व जेवर विधायक ठाकुर धीरेन्द्र सिंह ने अपने समर्थकों की मौजूदगी में सिसौदिया को गुलदस्ता देकर व सैकड़ों समर्थकों ने गले में फुल माला डालकर सांसद व विधायक का भी जोरदार स्वागत किया। इस दौरान क्षेत्रीय अध्यक्ष सतेन्द्र सिंह सिसौदिया व सांसद महेश शर्मा व जेवर विधायक ठाकुर धीरेन्द्र सिंह ने श्रीमद् भागवत कथा के मंच से दुरदराज से आये सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए आगामी लोकसभा चुनाव में अभी से जूट जाने केन्द्र व प्रदेश सरकार की लाभकारी योजनाओं को आम जनमानस तक पहुंचाने की अपील की । इस दौरान भाजपा नेताओं ने निर्धन व गरीब, बेसहारा महिलाओं को सर्दी से बचाव के लिए कंबल वितरित किये गये।

इस मौके पर सेंसर बोर्ड के उपाध्यक्ष व दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री तरूण राठी,भाजपा जिलाध्यक्ष गजेन्द्र मावी,भाजपा मंडल अध्यक्ष जेवर अशोक शर्मा,सैकी ठाकुर,रवि अग्रवाल,रोहित ठाकुर, विकास चौधरी,चन्द्रपाल सिंह,भाजयुमो जिलाध्यक्ष राज नागर,सतपाल तालान,योगेश चौधरी, संजय रावत, रविन्द्र शर्मा बौबी, मोनू गर्ग, नीरज गोयल, डाक्टर जगमोहन शर्मा, लायक राम पहाड़िया, संजय पाराशर, समेत सैकड़ों की तादात में कार्यकर्ता मौजूद थे।

पृष्ठ एक के शेष....

तकनीकी के साथ-साथ...

से लोगों के सामने रखा। इस अवसर पर प्रदेश के पूर्व मंत्री एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता नवाब सिंह नागर ने कहा कि आज के समय में बच्चों को तकनीकी ज्ञान के साथ साथ आध्यात्मिक ज्ञान भी होना चाहिए। ईश्वर ने मानव के अंदर असीम ऊर्जा प्रदान की है। इसका सही उपयोग करना चाहिए। मानसिक रूप से बच्चे कैसे स्वास्थ्य रहे, इसकी जिम्मेदारी सबसे ज्यादा शिक्षकों,अभिभावकों के ऊपर है।

इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में रेलवे कंटेनर से सेवानिवृत वेदप्रकाश उपस्थित रहे। स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती मौसमी बनर्जी, विद्यालय के संचालक सचिन नागर, मनीष नागर सभी शिक्षकों तथा कर्मचारियों को इस सुंदर आयोजन के लिए धन्यवाद एवं शुभकामनाएं दी।

रिटायर्ड मेजर की...

अपने पेपर वापस लेने के लिए ललित कुमार के पास पहुंचा तो उसने तथा उसके साथियों ने उसके साथ गाली गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दी और कागजातों को देने से साफ इनकार कर दिया।

महाकौथिग मेले से...

मोबाइल फोन के जरिए पेटीएम से 5000 रूपये ट्रांसफर कर लिए गए। मोबाइल चोरी होने की जानकारी मिलने पर उसने जब मेले में लगे सीसीटीवी कैमरे की फोटो देखी तो उसमें एक व्यक्ति उसके पर्स से मोबाइल फोन निकलता हुआ दिख रहा है। थाना प्रभारी ने बताया कि पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है और चोर की तलाश की जा रही है।

आरडब्ल्यूए अध्यक्ष ने...

उसे सुनकर मैं घर के बाहर आया जो मैंने देखा मकान न ए-121 के सामने हरेन्द्र नागर व उसके तीनों पुत्र अरूण, पवन व कृष्णा जो लाठी-डंडों के साथ जो मेरे घर व उपरोक्त महिलाओं को गालियां दे रहे थे, को मेरे द्वारा गालियां देने के विरोध करने पर हरेन्द्र नागर और उसके तीनों बेटों ने जानबूझकर मुझे व मेरे परिवार को अपमानित करने के लिये मेरी पत्नी जागृति तिवारी की छाती पर धक्का मारा जिसको हाथ पकड़कर खींचने की कोशिश की तथा जब मैने विरोध किया तो हरेन्द्र नागर और उसके तीनों पुत्रों ने मुझे मारपीट की एवं नीचे गिरा दिया। शोरगुल की आवाज सुनकर सेक्टर के लोग दौडकर आये जिन्होने मुझे बचाया तो यह लोग गाली-गलौच एवं जान से मारने की धमकी देते हुए चले गये कि तू हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता हम यहाँ के लोकल गुर्जर हैं ।यह आये दिन झगड़े पर उतारू रहते है एवं इन लोगों ने मेरी पत्नी के साथ मेरे सामनें छेड़छाड़ की है और मेरे साथ मारपीट की है। उसने कहा कि बच्चों को उठवा लूंगा।

सुधांशु तिवारी की तहरीर के आधार पर बीटा-2 थाने की पुलिस ने हरेन्द्र नागर उनके पुत्र अरूण, पवन तथा कृष्णा के विरूद्ध धारा-323, 504, 506 तथा 354 के तहत मामला दर्ज करके छानबीन शुरू कर दी है। हरेन्द्र नागर सेक्टर पी-4 का आरडब्ल्यूए का अध्यक्ष है।

किशोरी ने फांसी...

थाना प्रभारी के मुताबिक मौके से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है जिससे आत्महत्या की वजह का पता नहीं चल पा रहा है। परिजन भी संध्या द्वारा आत्महत्या किए जाने का कोई ठोस कारण नहीं बता पा रहे हैं।

सेक्सवर्धक दवाइयों...

जिसके बाद नवंबर 2022 में दोनों परिवारों की रजामंदी से शादी हो गई। युवती ने आरोप लगाया कि शादी के बाद उसे पता चला कि उसका पति सेक्सुअल डिसीज का शिकार है। पति-पत्नी के बीच बनने वाले मधुर संबंधों से ऊपर उठकर उसका पति सेक्स वर्धक और नशीली दवाओं का सेवन करने के बाद ही बेडरुम में प्रवेश करता था और उसे शारीरिक रुप से प्रताड़ित करता है। जब वह नशीली और सेक्स वर्धक दवाओं का सेवन ना करके संबंध बनाने के लिए कहती तो उसके साथ मारपीट की जाती है।

युवती ने बताया कि शादी के कुछ समय बाद ही उस पर मायके से अतिरिक्त दहेज लाने का दबाव बनाया जाने लगा। दिसंबर 2022 तथा फरवरी 2023 में उसके साथ मारपीट करके घर से बाहर निकाल दिया गया। लेकिन उसके पिता ने किसी तरह से समझौता कराया। युवती का यह भी आरोप है कि उसके पति की गंदी हरकतों में उसके ससुर, सास और परिवार के अन्य लोग भी साथ देते हैं। यही नहीं आरोपी पति ने दबाव बनाकर उसकी तमाम जमा पूंजी को हड़प लिया और उसके नाम पर लाखों रुपये का लोन ले लिया, जिस कारण वह 35 लाख रुपये से ज्यादा के कर्ज में डूब गई है। लेकिन ससुराल वाले इस कर्ज को चुकता नहीं कर रहे हैं और उसी पर कर्ज चुकाने का दबाव बनाते रहते हैं।

युवती की शिकायत पर थाना सूरजपुर पुलिस ने आरोपी पति, सास, ससुर, जेठ व जेठानी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। थाना पुलिस का कहना है कि मामले की जांच पड़ताल की जा रही है। आरोपियों के खिलाफ आवश्यक विधिक कार्रवाई अमल में लाई जा रही है।

पीजी से 2 लैपटॉप...

तथा दो लैपटॉप गायब मिले। उन्होंने जब पीजी में लगे सीसीटीवी कैमरा चेक किये तो पता चला कि एक युवती उनकी अनुपस्थिति में कमरे में घुसी और कुछ ही देर में कमरे से दो लैपटॉप चोरी कर मौके से फरार हो गई।

आयुषी कुमारी ने थाना बीटा-2 पुलिस को चोरी की घटना की सीसीटीवी फुटेज भी उपलब्ध कराई है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच पड़ताल की जा रही है।

विभिन्न स्थानों से...

और उन्होंने इसे अलग-अलग जगह से चोरी किया है। चोरी किए गए मोबाइल फोन को वह सस्ते दामों में राह चलते लोगों को बेच देते थे।

थाना प्रभारी ने बताया कि आरोपियों से बरामद बाइक दीपक के भाई प्रवीण कुमार की है जिसे वह चोरी की घटनाओं में इस्तेमाल करता है।

थाना सूरजपुर पुलिस ने भट्ट गोल चक्कर के पास चेकिंग के दौरान पल्सर बाइक पर आ रहे तीन युवकों को जांच के लिए रोका तथा शक के आधार पर ली गई तलाशी में उनके पास से चार मोबाइल फोन, तमंचा, कारतूस व बाइक बरामद हुए। पकड़े गए बदमाशों ने अपने नाम राजू अमित शर्मा व अजय बताते स्वीकार किया कि उक्त मोबाइल फोन लुटे हुए हैं।

पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि बरामद पल्सर बाइक भी चोरी की है उसे इन्होंने बीते दिनों चोरी किया था। पल्सर बाइक पर वह फर्जी नंबर प्लेट लगाकर आपराधिक वारदातों में प्रयोग करते थे। थाना प्रभारी के मुताबिक पकड़े गए बदमाशों ने बीते 21 दिसंबर की शाम को कौशल्या वर्ल्ड स्कूल के पास से एक युवती से मोबाइल फोन छीना था। पकड़े गए बदमाशों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर इन्हें न्यायालय में पेश किया गया है।

युवती से छेड़छाड़...

मौके पर आ गया। अयान ने जब चारों युवकों की हरकतों का विरोध किया तो आरोपियों ने उसके साथ मारपीट की।

शबनम का आरोप है कि जब वह अपने भाई को बचाने पहुंची तो आरोपियों ने उसके साथ भी मारपीट की। आरोपी रिपोर्ट करने पर जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए। थाना प्रभारी का कहना है कि पीड़िता की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है और आरोपियों की तलाश की जा रही है।

सड़क हादसों में...

वहीं आगरा में बस व ट्रक की टक्कर में घायल हुए कांस्टेबल सत्येंद्र सिंह पुत्र हरि सिंह को उपचार के लिए बीते 20 दिसंबर को सेक्टर 27 स्थित कैलाश अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सतेंद्र सिंह की हालत शुरू से ही नाजुक बनी हुई थी। बीती रात्रि सत्येंद्र ने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। मूल रूप से ग्राम नगला हरगोविंद मथुरा निवासी सत्येंद्र सिंह 2019 में उत्तर प्रदेश पुलिस में भर्ती हुआ था। वह हाल में थाना हरचंदपुर जिला रायबरेली में तैनात था। सत्येंद्र सिंह 15 दिसंबर को 7 दिन के आकस्मिक अवकाश पर बस से अपने घर मथुरा जा रहा था।

वहीं थाना दनकौर क्षेत्र के सिकंदराबाद रोड पर पैदल जा रहे सोनू पुत्र नवाब सिंह को अज्ञात वाहन ने कुचल दिया। गंभीर स्थिति में उसे अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

स्थानांतरण होने पर समाजसेवियों ने ट्रैफिक इंस्पेक्टर का किया सम्मान

दनकौर(चेतना मंच)। थाना क्षेत्र के खेरली नहर तिराहा स्थित भाटी फार्म हाउस पर क्षेत्र में बेहतर यातायात व्यवस्था बनाए रखना से प्रभावित समाजसेवियों ने ग्रामीण विकास चेतना मंच के संयोजक तिलक भाटी के नेतृत्व में वरिष्ठ पत्रकार व सामाजिक चिंतक नंद गोपाल वर्मा की अध्यक्षता में एस आई मुकेश कुमार का पगड़ी बांध व माला पहनाकर गर्म जोशी के साथ स्वागत किया। अपने विदाई समारोह में एस आई मुकेश कुमार ने कहा कि हर सरकारी कर्मचारी का कर्तव्य सामाजिक व्यवस्थाओं को सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित बनाए रखना होता है मैं जहां भी रहूंगा पारदर्शिता के साथ कर्तव्य निभाता रहूंगा उल्लेखनीय है कि एस आई मुकेश कुमार सिंह का गौतम बुद्ध नगर से मंडल मुरादाबाद को स्थानांतरण हो जाने पर ग्रामीण विकास

चेतना मंच के कार्यकर्ताओं द्वारा उक्त विदाई समारोह आयोजित किया गया इस मौके पर समाजसेवी तिलक भाटी वरिष्ठ पत्रकार व सामाजिक चिंतक नंद गोपाल वर्मा पत्रकार नितेश शर्मा निगम कुमार संदीप कुमार जितेंद्र कुमार आकाश पिंटू विकास हरवीर सिंह इत्यादि मौजूद रहे।

पैसे मांगने पर विहिप नेता को गोलियों से भूनने की धमकी

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। विश्व हिंदू परिषद के जिला विशेष संपर्क प्रमुख द्वारा उधार के पैसे वापिस मांगने पर परिचित ने गोलियों से भूनने की धमकी दी है। धमकी से सहमें विहिप नेता ने थाना ईकोटेक-3 में नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई है। ग्राम इमलियाका निवासी व विश्व हिंदू परिषद के विशेष संपर्क प्रमुख फतेह नागर ने पुलिस में की शिकायत में बताया कि वह और शुभम प्रताप सिंह एक ही स्कूल में पढ़ते थे। बीते 3 दिसंबर को शुभम प्रताप ने उसे फोन कर बताया कि उसके पास पैसे नहीं है और वह उसे 5000 रूपये पेटीएम कर दे जिन्हें वह जल्द वापस लौटा देगा। उन्होंने जान पहचान होने के कारण शुभम प्रताप सिंह के पेटीएम में 5000 रूपये ट्रांसफर कर दिए। कुछ दिनों बाद जब उन्होंने पैसे लौटाने को कहा तो शुभम प्रताप सिंह ने उनके फोन उठाना बंद कर दिया। इस बात से परेशान होकर उन्होंने उसके पिता रवि से फोन पर बात की तो उन्होंने कहा कि वह पिछले 3 साल से उससे अलग रह रहा है और उनका उससे कोई मतलब नहीं है। फतेह नागर के मुताबिक इसके बाद उन्होंने शुभम को मैसेज कर पैसे देने को कहा। इस पर शुभम प्रताप सिंह ने उन्हें बीते 19 दिसंबर को कॉल की। जिस पर फोन न करने का दबाव बनाते हुए उसने गाली गलौज की। शुभम प्रताप सिंह ने कहा कि वह उसके घर जाकर उसे गोलियों से भूनकर रख देगा। फतह नागर ने धमकी की ऑडियो भी पुलिस को उपलब्ध कराई है। फतह नागर का कहना है कि इस धमकी के बाद वह काफी भयभीत है। अगर उनके साथ भविष्य में कोई अनहोनी घटना होती है तो उसकी पूरी जिम्मेदारी शुभम प्रताप सिंह की होगी। थाना प्रभारी का कहना है कि विहिप नेता की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

प्रदूषण से कराह रही दिल्ली में शुरु हो सकती है ऑनलाइन पढ़ाई

नई दिल्ली। दिल्ली और एनसीआर में प्रदूषण कम होने का नाम नहीं ले रहा है। यहां की हवा इतनी जहरीली हो रही है कि लोगों का सांस लेना मुश्किल हो गया है। ऐसे में यहां ग्रैप 3 की पाबंदिया एक बार फिर लागू की गई हैं। एक्यूआर 400 के पार हो गया है। बढ़ते प्रदूषण के कारण दिल्ली सरकार स्कूलों की पढ़ाई ऑनलाइन करने पर विचार कर रही है। हो सकता है कि आने वाले समय में यहां ऑनलाइन पढ़ाई शुरु हो जाए। दिल्ली में प्रदूषण की स्थिति को देखते हुए सरकार कक्षा पांचवी तक के लिए ऑनलाइन क्लास की अनुमति दे सकती है। इसके अलावा ग्रैप 4 की पाबंदिया भी लागू की जा सकती है। बता दें, इससे पहले यहां के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने ग्रैप 3 के तहत प्रतिबंध लागू करने की घोषणा की थी। इसके तहत निर्माण और तोड़फोड़ की गतिविधियों को बैन करने के साथ ही बीएस 3 पेट्रोल और बीएस 4 डीजल वाहन चलाने की इजाजत नहीं है। शनिवार को दिल्ली में एक्यूआई 450 दर्ज किया गया था जो गंभीर श्रेणी में आता है। माना जा रहा है कि आने वाले कुछ दिनों में प्रदूषण की यही स्थिति बरकरार रह सकती है और इससे राहत मिलने की संभावना बेहद कम है।

जेएनयू में लागू नियमों के विरोध में मशाल लेकर निकले छात्र

नई दिल्ली । दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्रों ने मशाल जुलूस निकाला है। यह जुलूस यहां लागू किए गए नियमों के विरोध में निकाला गया है। दरअसल जेएनयू प्रबंधन ने कुछ नए नियम बनाए हैं जिसके खिलाफ छात्रों ने शनिवार को मशाल जुलूस निकाला है। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संगठन से जुड़े कुछ छात्र संगठनों मसलन तथा हॉस्टल के अध्यक्ष ने मशाल जुलूस निकाला। प्रदर्शन कर रहे छात्र चीफ प्रॉक्टर कार्यालय के मैनुअल का विरोध कर रहे थे और इसे तानाशाही कह रहे थे। नए नियमों के मुताबिक, अब जेएनयू के प्रतिबंधित क्षेत्रों में प्रदर्शन करने पर छात्रों पर 20,0000 रुपये से ज्यादा का जुर्माना लगाया जा सकता है और देश-विरोधी नारे लगाने पर 10,000 रुपये तक नारा लगाया जा सकता है। इन नए नियमों के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे छात्र सीपीओ मैनुअल वापस लो और फाइन राज बंद करो के नारे लगा रहे थे। बताया जा रहा है कि छात्र विश्वविद्यालय के गंगा ढाबा के पास जुटे थे और चंद्रभाग हॉस्टल तक उन्होंने मार्च किया। छात्रों ने कहा कि सीपीओ मैनुअल के खिलाफ उनका प्रदर्शन जारी रहेगा और वो अगर इसे वापस नहीं लिया जाता है कि भूख हड़ताल भी करेंगे। यह जेएनयू की परंपरा हो गई है कि छात्र संगठन तानाशाही नियमों के खिलाफ लड़ते है और छात्र संगठन अपना आवाज उठाते रहे हैं। जेएनयू स्टुडेन्ट्स यूनियन के अध्यक्ष आयशी घोष ने कहा, हम सीपीओ मैनुअल के खिलाफ प्रदर्शन करेंगे और अगर जरूरत पड़ी तो हम भूख हड़ताल पर भी बैठेंगे। ताकि विश्वविद्यालय में लोकतंत्र की रक्षा हो सके।

मांझी ने नीतीश से मांगी बिहार में भी शराब पीने की छूट

पटना । बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने बिहार में भी शराब पीने की छूट देने की मांग की है। उन्होंने गुजरात की तरह यहां भी छूट की मांग करते हुए कहा कि जैसे गुजरात में इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी (गिफ्ट) को शराबबंदी कानून में छूट देने की घोषणा की गई है, वैसे ही बिहार में भी शराब की खपत पर नियमों में ढील देने की आवश्यक्ता है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को बिहार में गुजरात का शराबबंदी का नया मॉडल लागू करना चाहिए, क्योंकि इससे व्यापार और विदेशी मुद्रा में वृद्धि होगी। उन्होंने कहा बिहार को लगातार राजस्व का नुकसान हो रहा है। शराबबंदी के कारण राज्य में पर्यटन को नुकसान हुआ है। मैंने यह बार-बार कहा है कि सीमित मात्रा में शराब का सेवन गरीबों और श्रमिकों सहित अन्य लोगों के लिए फायदेमंद है। मांझी ने कहा ?कि मैं इस तरह का निर्णय लेने के लिए गुजरात सरकार को धन्यवाद देता हूं। अगर बिहार में भी ऐसा किया जाता है तो विदेशी मुद्रा में 10 गुना वृद्धि होगी। पूर्व सीएमस जीतन राम मांझी ने नीतीश कुमार पर निशाना साधते हुए कहा, 2005 से 2010 तक नीतीश कुमार ने हर घर में शराब उपलब्ध कराई और आज वह कह रहे हैं कि वह शराब पीने के खिलाफ हैं। गौरतलब है कि 2016 में बिहार सरकार ने राज्य भर में शराब की बिक्री, खरीद, खपत, निर्माण और भंडारण पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था। यहां पर यदि कोई भी निषेध कानून का उल्लंघन करते हुए पाया जाता है तो भारी जुर्माना और सख्त सजा का प्रावधान है। इधर गुजरात सरकार ने गिफ्ट सिटी में वाइन एंड डाइन सेवा प्रदान करने वाले होटलों, रेस्तरां और क्लबों में शराब के सेवन की अनुमति दे दी।

540 ग्राम हेरोइन के साथ खेत में मिला ड्रोन, बीएसएफ ने किया बरामद

नई दिल्ली। बीएसएफ ने सर्च अभियान के दौरान एक खेत से चीन में निर्मित डीजेआई माविक-3 क्लास्कि ड्रोन बरामद किया गया। जवानों ने इसके साथ पीले रंग की सेलो टेप में लिपटा एक पैकेट भी बरामद किया है। इसमें 540 ग्राम हेरोइन मिली है। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने पुलिस के साथ संयुक्त सर्च अभियान में सीमांत गांव भैणी राजपूतां के एक खेत से ड्रोन और हेरोइन का एक पैकेट बरामद किया है। बीएसएफ के वरिष्ठ अधिकारियों ने जांच करने के बाद ड्रोन और हेरोइन का पैकेट स्थानीय पुलिस को सौंप दिया है। इस मामले में बीएसएफ के प्रवक्ता ने बताया कि बल की एक टुकड़ी शनिवार सुबह पंजाब पुलिस के साथ मिलकर संयुक्त रूप से अमृतसर जिले के सीमांत गांव भैणी राजपूतां में गश्त कर रही थी। इसी दौरान सूचना मिली कि गांव के एक खेत में पाकिस्तानी ड्रोन पड़ा है। तुरंत बीएसएफ जवानों ने सुबह करीब 10:58 बजे पंजाब पुलिस के साथ मिलकर संयुक्त सर्च अभियान चलाया। प्रवक्ता ने बताया ?कि सर्च अभियान के दौरान एक खेत से चीन में निर्मित डीजेआई माविक-3 क्लास्कि ड्रोन बरामद किया गया। जवानों ने इसके साथ पीले रंग की सेलो टेप में लिपटा एक पैकेट बरामद किया है। इसमें 540 ग्राम हेरोइन मिली है। पुलिस ने ड्रोन और हेरोइन को कब्जे में लेने के बाद अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

सरकारी अस्पताल में यौन उत्पीड़न की शिकायत पर आयोग ने मांगा जवाब

नई दिल्ली। बुराड़ी स्थित एक सरकारी अस्पताल में हाउसकीपिंग का काम करने वाली महिला ने यौन उत्पीडन की शिकायत की है। इस मामले में दिल्ली महिला आयोग (डीसीडब्ल्यू) ने पुलिस को नोटिस जारी कर 26 दिसंबर तक रिपोर्ट देने को कहा है। महिला की शिकायत के बाद डीसीडब्ल्यू ने दिल्ली पुलिस और अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक को नोटिस जारी कर एफआईआर और कार्रवाई रिपोर्ट मांगी है। पीड़िता ने दावा किया है कि उसने कथित घटना के संबंध में पुलिस में शिकायत भी दर्ज कराई है ।अधिकारियों को दिए गए नोटिस में कहा गया है, हमें अपने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के संबंध में एक महिला से शिकायत मिली है। शिकायतकर्ता ने कहा है कि वह बुराड़ी के सरकारी अस्पताल में हाउसकीपिंग (विभाग) में काम करती है ।उसका आरोप है कि 17 दिसंबर को उनके मैनेजर और सुपरवाइजरों ने उसके और एक अन्य महिला स्टाफ के साथ छेड़छाड़ की ।शिकायतकर्ता ने कहा है कि 19 दिसंबर को उसके प्रबंधक और पर्यवेक्षकों ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया और उसे परेशान किया और उनकी अनुचित मांगों को नहीं मानने पर उसे ड्यूटी से हटाने की धमकी दी ।डीसीडब्ल्यू ने दिल्ली पुलिस से मामले में दर्ज एफआईआर की प्रति और गिरफ्तार आरोपियों का विवरण उपलब्ध कराने को कहा है। पुलिस को दिए गए नोटिस में कहा गया है,यदि किसी आरोपी को गिरफ्तार नहीं किया गया है, तो कृपया इसके कारण और मामले में विस्तृत कार्रवाई रिपोर्ट दें। मामले की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए कृपया 26 दिसंबर तक आयोग को मांगी गई जानकारी दें।

एक लाख लोग एक साथ करेंगे गीता पाठ, मोदी ने लिखा खास संदेश

कोलकाता। गीता जयंती के उपलक्ष्य में रविवार को कोलकाता के ब्रिगेड परेड ग्राउंड में एक लाख लोग एक साथ गीता का पाठ करेंगे। इसे लेकर पीएम नरेन्द्र मोदी ने खास संदेश लिखा है। जानकारी के अनुसार सामूहिक गीता पाठ लोक्खो कंठे गीता पाठ के आयोजन को लेकर पीएम ने लिखा कि एक लाख लोगों द्वारा गीता का पाठ करने के उद्देश्य से की गई पहल वास्तव में प्रशंसनीय है। इस कार्यक्रम में कई लोग शामिल होने वाले हैं। गीता जयंती के उपलक्ष्य में रविवार यानी आज कोलकाता के ब्रिगेड परेड ग्राउंड में सामूहिक गीता पाठ लोक्खो कंठे गीता पाठ का आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम को लेकर पीएम मोदी ने लोगों के नाम संदेश लिखा है।

सदन में व्यवधान इरादातन और रणनीति के तहत था: धनखड़

-कांगेस प्रमुख खरगे के पत्र के जवाब में उपराष्ट्रपति ने बातचीत के लिए बुलाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा है कि सदन में व्यवधान इरादातन और रणनीति के तहत था। उन्होंने कांग्रेस प्रमुख खरगे के पत्र के जवाब में लेटर लिखकर उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया। शनिवार को कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खरगे को संसद में व्यवधान और विपक्षी सांसदों के निलंबन के मुद्दे पर बातचीत के लिए 25 दिसंबर को अपने आवास पर आमंत्रित किया और कहा कि उनके बार-बार आग्रह के बावजूद शीतकालीन सत्र के दौरान ऐसी बैठक नहीं हो सकी। उपराष्ट्रपति ने कहा कि सदन में व्यवधान इरादातन था और रणनीति के तहत था। धनखड़ ने पत्र में कहा कि इस प्रकरण में मुख्य विपक्षी दल की पूर्वनियोजित भूमिका की ओर इंगित करके, मैं आपको लज्जित नहीं करना चाहता, लेकिन जब कभी भी मुझे आपसे बातचीत करने का अवसर लाभ मिलेगा, मैं आपसे वह साझा अवश्य करूंगा।

राज्यसभा में विपक्ष के नेता खरगे को एक ताजा पत्र में धनखड़ ने लिखा कि हमें आगे बढ़ने की जरूरत है, और उन्हें 25 दिसंबर को या उनकी सुविधानुसार किसी भी समय पर अपने आधिकारिक आवास पर बातचीत के लिए आमंत्रित किया।

धनखड़ ने खरगे के 22 दिसंबर के पत्र का जवाब देते हुए कहा कि उन्हें संतोष होता अगर कांग्रेस नेता का यह दावा कि हम संवाद और बातचीत में दृढ़ता से यकीन रखते हैं, वास्तव में चरितार्थ हो पाता। धनखड़ ने पत्र में लिखा है कि पूरे सत्र भर, कभी मैंने सदन के अंदर आग्रह किया तो कभी पत्र लिखकर आपसे संवाद और परामर्श करने का अनुरोध किया, आपसे बातचीत करने के लिए बार बार किया गया मेरा हर प्रयास विफल रहा। धनखड़ ने कहा कि खरगे के दृष्टिकोण के विपरीत, निलंबन का कारण सदन में की जा रही नारेबाजी, तख्ती लहराना, सदन के वेल में घुसने का प्रयास और आसन के सामने अशोभनीय व्यवहार कर, इरादतन पैदा किया जा रहा व्यवधान था।

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा कि इस दुर्भाग्यपूर्ण कदम को उठाने से पहले, मेरे द्वारा सदन में व्यवस्था स्थापित करने के हर प्रयास, हर उपाय किए गए। हालांकि थोड़ी थोड़ी देर के लिए सदन को स्थगित कर, मैंने अपने कक्ष में बुला कर बातचीत करने का भी भरसक प्रयास किया। बता दें कि कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने शुक्रवार को धनखड़ को पत्र लिखकर कहा था कि इतने बड़े पैमाने पर सांसदों का निलंबन भारत के संसदीय लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों के लिए हानिकारक है।

छह जनवरी को अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचेगा आदित्य एल-1

-इसरो ने देश के पहले सौर मिशन को लेकर दिया बड़ा अपडेट

नई दिल्ली। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष एस सोमनाथ ने कहा कि भारत का पहला सौर मिशन 'आदित्य एल-1 छह जनवरी को अपने गंतव्य स्थान 'लैग्रेंजियन पॉइंट (एल-1) पर पहुंचेगा। यह गंतव्य पृथ्वी से 15 लाख किलोमीटर दूर है। इस मिशन को इसरो ने दो सितंबर को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी) से प्रक्षेपित किया था। यह अंतरिक्ष-आधारित पहली भारतीय वेधशाला है जिसके तहत 'हेलो ऑर्बिट एल1 से सूर्य का अध्ययन किया जाना है। इसरो प्रमुख सोमनाथ ने विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए कार्यरत गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) विज्ञान भारती द्वारा आयोजित भारतीय विज्ञान सम्मेलन के मौके पर मीडियाकर्मियों से कहा, 'आदित्य एल1 छह जनवरी को एल1 बिंदु में प्रवेश करेगा। ऐसी उम्मीद है। उचित समय पर सटीक समय की घोषणा की जाएगी। उन्होंने कहा कि जब यह एल1 बिंदु पर पहुंचेगा, तो हमें इंजन को एक बार फिर से चालू करना होगा ताकि यह आगे न बढ़े। यह उस बिंदु तक जाएगा और एक बार जब यह उस बिंदु पर पहुंच जाएगा तो यह इसके चारों ओर घूमने लगेगा और एल1 पर फंस जाएगा। इसरो प्रमुख सोमनाथ ने कहा कि जब आदित्य एल1 अपने गंतव्य पर पहुंच जाएगा, तो यह अगले पांच वर्षों तक सूर्य पर होने वाली विभिन्न घटनाओं का पता लगाने में मदद करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि भारत भविष्य में तकनीकी रूप से एक शक्तिशाली देश बनने वाला है। सोमनाथ ने कहा कि इसरो ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के निर्देशों के अनुसार 'अमृत काल के दौरान एक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन बनाने की योजना भी बनाई है, जिसे 'भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन कहा जाएगा।

चौधरी चरण सिंह की नीतियों से किसान न्याय का मार्ग हुआ प्रशस्त : अखिलेश यादव

-121वीं जयंती पर सपा ने चरण सिंह की नीतियों पर चलने का संकल्प

लखनऊ (एजेंसी)। किसान समृद्धि के लिए आजीवन संघर्ष करने वाले पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की आर्थिक नीतियों से ही देश में न्याय का रास्ता प्रशस्त हुआ है। शनिवार को पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की 121वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि पार्टी उनके रास्ते पर चलते हुए गांवों का विकास तथा किसानों की तरक्की सुनिश्चित करेगी। कांग्रेस राज्य मुख्यालय से जारी बयान के अनुसार शनिवार को अपने चौथे दिन 'यूपी जोड़ो यात्रा' बिजनौर से शुरू हुई। यात्रा के दौरान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पूर्व राज्यमंत्री अजय राय ने पूर्व प्रधानमंत्री एवं किसान राजनेता चौधरी चरण सिंह की जयंती के मौके पर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। बिजनौर के बिलई चीनी मिल पर अजय राय ने अपने संबोधन कहा कि इतिहास गवाह है की जब-जब कोई यात्रा जनमानस से जुड़े सरोकार और मुद्दों की आवाज बनते हुए आगे बढ़ी है तो वह बड़े राजनीतिक परिवर्तन का वाहक बनी है।

उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी (सपा), कांग्रेस और राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) विपक्षी दलों ने शनिवार को जारी बयान में कहा गया पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की 121वीं जयंती लखनऊ सहित

प्रत्येक जिले में सादगी से मनाई गई। अखिलेश यादव ने पार्टी मुख्यालय के डॉ. राम मनोहर सभागार में उनकी तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की।

राष्ट्रीय लोकदल ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' (पूर्व में ट्विटर) पर पोस्ट कर कहा, ''किसान मसीहा व भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चौधरी चरण सिंह की 121वीं जयंती पर विधान भवन स्थित चौधरी साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण और पार्टी मुख्यालय पर हवन पूजन कर भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष रामाशीष राय, राष्ट्रीय सचिव अनुपम मिश्रा, राष्ट्रीय प्रवक्ता अनिल दुबे, व्यापार प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष रोहित अग्रवाल एवं अन्य पार्टी पदाधिकारी, कार्यकर्ता मौजूद रहे। सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी के सहयोगी अपना दल (एस) कार्यालय में भी किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर पार्टी कार्यालय में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

जलवायु परिवर्तन मानव जाति के लिए विश्व युद्धों से भी बड़ा खतरा: सोनम वांगचुक

नई दिल्ली (एजेंसी)। रमन मैगसायसाय पुरस्कार विजेता सोनम वांगचुक ने शनिवार को कहा कि जलवायु परिवर्तन मानव जाति के लिए विश्व युद्धों से भी बड़ा खतरा है। वांगचुक ने पर्यावरण की रक्षा में आदिवासी समुदायों की भूमिका को रेखांकित किया और आधुनिक शहरों के निवासियों से, प्रकृति के करीब रहने वाले लोगों से जीवन जीने का तरीका सीखने का आग्रह किया। वांगचुक को यहां शैक्षणिक सुधारों, सतत परिवर्तन और पर्यावरण के संरक्षण में उनके योगदान के लिए 20वां उपेन्द्र नाथ ब्रह्मा 'सोल्जर ऑफ ह्यूमैनिटी' पुरस्कार 2023 प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 'यूएन ब्रह्मा ट्रस्ट' द्वारा दिया जाता है।

अपने नवाचारों के लिए मशहूर वांगचुक ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए सामूहिक प्रयास होने चाहिए क्योंकि जलवायु परिवर्तन विश्व युद्धों से भी अधिक खतरनाक है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि 'ग्लोबल वार्मिंग' की चुनौतियों का सामना करने और जलवायु परिवर्तन के खतरे से निपटने

में दुनिया भर में आदिवासी समुदायों को मजबूत किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा, ''आदिवासी समुदाय के लोगों का ज्ञान और उनकी समझ औद्योगीकरण और तथाकथित आधुनिक जीवन शैली की तुलना में लंबे वक्त के लिए अधिक लाभ प्रदान करने वाली है।'' वांगचुक ने आगाह किया कि ''पांच सितारा शहरों के रूप में दिल्ली या मुंबई या न्यूयॉर्क की संस्कृति'' धरती को नहीं बचाएगी। यह आदिवासी संस्कृति और परंपरा है जो प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करती है।'' उन्होंने कहा कि असम के बोडोलैंड क्षेत्र या लद्दाख के लोगों की पारंपरिक संस्कृति में देश की समृद्धि में योगदान देने की अधिक क्षमता है।

सपा नेता और उसके बेटे पर गैंगरेप का आरोप, वीडियों भी बनाया

सिद्धार्थनगर (एजेंसी)। यहां एक सपा नेता और उसके बेटे पर सामुहिक दुष्कर्म और वीडियों बनाने का आरोप लगा है।

सपा नेता और खुनियांव ब्लॉक के पूर्व ब्लॉक प्रमुख तौलेश्वर निषाद के बेटे अजय कुमार ने शादी करने का झांसा देकर करीब चार महीने पहले उसके साथ संबंध बनाया। उसका आपत्तिजनक वीडियो बनाकर कई बार रेप करते रहे। महिला गभर्वती हो गई तो उस पर जबरन गर्भपात कराने का दवाब बनाने लगे। बाद में वीडियो वायरल करने की धमकी देकर कई बार उसके साथ दुष्कर्म किया। गर्भ ठहरने पर जबरन गर्भपात करा दिया। इसके डेढ़ महीने बाद अजय ने फिर उसके साथ दुष्कर्म किया। इस बार गर्भ ठहर जाने पर पीड़िता शादी के लिए अड़ गई। 9 दिसंबर की शाम वह अजय के घर गई। अजय के पिता तौलेश्वर निषाद अपने भाई राधेश्याम के साथ उसे इनोवा गाड़ी में बैठाकर अपने दूसरे मकान पर बांसी ले गए और उसके साथ दुष्कर्म किया।

सपा नेता और खुनियांव ब्लॉक के पूर्व प्रमुख तौलेश्वर निषाद, उसके बेटे अजय कुमार और भाई राधेश्याम पर दुष्कर्म पीड़िता का आरोप है कि नौ दिसंबर को तौलेश्वर और राधेश्याम ने उसे गर्भपात कराने के लिए रुपये का लालच दिया। उसने इनकार कर दिया तो वे नाराज हो गए और बांसी ले जाकर दोनों ने उसके साथ रेप किया। इससे पीड़िता बेहोश हो गई। होश आने पर देखा कि घर खुला छोड़कर दोनों फरार हो गए हैं। पीड़िता के मुताबिक वह किसी तरह घर आई और लोकलाज और आरोपियों के डर से कहीं कोई सूचना नहीं दी। जब पेट में पल रहे बच्चे की चिंता हुई तो तहरीर देने की हिम्मत जुटाई। पुलिस ने तहरीर के आधार पर पूर्व ब्लॉक प्रमुख तौलेश्वर निषाद, उसके बेटे अजय कुमार और भाई राधेश्याम के खिलाफ विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर शनिवार को बाप-बेटे को बांसी के पटेलनगर से गिरफ्तार कर लिया। थानाध्यक्ष कन्हैया लाल मौर्य ने बताया कि महिला ने तहरीर दी है कि पति के साथ उसका संबंध खत्म हो चुका है। थानाध्यक्ष ने बताया कि आरोपी राधेश्याम फरार चल रहा है। उसे पकड़ने के लिए पुलिस टीम लगी हुई है।

कर्नाटक में जातीय जनगणना व्यवस्थित ढंग से नहीं करायी गयी, नये सिरे से सर्वेक्षण कराएं: येदियुरप्पा

बेंगलुरू (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कद्दावर नेता बी एस येदियुरप्पा ने रविवार को कहा कि 'जातीय जनगणना' नाम से चर्चित कर्नाटक का सामाजिक-आर्थिक एवं शैक्षिक सर्वेक्षण व्यवस्थित ढंग से नहीं कराया गया, ऐसे में राज्य की कांग्रेस सरकार से अनुरोध है कि वह नये सिरे से सर्वेक्षण कराए और तथ्यों को लोगों के सामने रखे। कर्नाटक में वर्चस्व रखने वाले दो समुदायों (वोक्कलिगा और लिंगायत) ने भी इस सर्वेक्षण को अवैज्ञानिक करार देते हुए अस्वीकार कर दिया है तथा मांग की है कि इसे खारिज कर नये सिरे से सर्वेक्षण कराया जाए। पूर्व मुख्यमंत्री येदियुरप्पा ने कहा, ''सभी के दिमाग में यह बात है कि सर्वेक्षण व्यवस्थित ढंग नहीं कराया गया।

मेरी भी ऐसी ही राय है। इसलिए नये सिरे से जाति आधारित सर्वेक्षण कराया जाए तथा तथ्यों से लोगों को अवगत कराया जाए। मैं सरकार से इस दिशा में ईमानदार प्रयास करने की अपील करता हूं।'' येदियुरप्पा लिंगायत समुदाय से आते हैं। साल 2015 में सिद्धरमैया की अगुवाई वाली तत्कालीन कांग्रेस सरकार (2013-2018) ने राज्य में 170 करोड़ रुपये के अनुमानित खर्च से सामाजिक-आर्थिक एवं

शैक्षिक सर्वेक्षण कराया था जिसे 'जातीय जनगणना' कहा गया था। तत्कालीन अध्यक्ष एच कंठराजू की अध्यक्षता में राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग को इस जातीय जनगणना की रिपोर्ट तैयार करने की जिम्मेदारी दी गयी थी। यह सर्वेक्षण सिद्धरमैया के बतौर मुख्यमंत्री पहले कार्यकाल के समापन के समीप 2018 में पूरा हुआ था लेकिन उसे न तो स्वीकार किया गया और न ही सार्वजनिक किया गया था। हाल में बिहार सरकार द्वारा अपनी जातीय सर्वेक्षण रिपोर्ट जारी किये जाने के बाद एक वर्ग की ओर से कर्नाटक सरकार पर जातीय सर्वेक्षण रिपोर्ट जारी करने का दबाव पड़ने लगा, ऐसे में मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने कहा है कि रिपोर्ट मिलने के बाद इस संबंध में निर्णय लिया जाएगा। फिलहाल, वर्तमान अध्यक्ष के जयप्रकाश हेगड़े की अध्यक्षता वाले कर्नाटक राज्य पिछड़ा वर्ग आयोगके पास जातीय जनगणना के निष्कर्ष हैं। आयोग को यह रिपोर्ट सरकार को 31 जनवरी, 2024 तक सौंपने को कहा गया है। हिजाब विवाद पर येदियुरप्पा ने कहा कि मुख्यमंत्री सिद्धरमैया को समुदायों के बीच विष के बीज बोना बंद करना चाहिए क्योंकि इससे न तो उन्हें और न ही उनकी पार्टी को किसी भी तरह कोई फायदा होगा। उन्होंने कहा, '' अच्छा है कि हमारे दबाव के कारण सिद्धरमैया ने अपना बयान वापस ले लिया है , कम से कम अब तो सदबुद्धि आएगी। हम अल्पसंख्यक विरोधी नहीं हैं। भाजपा मानती है कि हिंदू, ईसाई और मुसलमान को एक मां की संतान के रूप में साथ मिलकर रहना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यह बात कई बार कही है।'' सिद्धरमैया ने शनिवार को स्पष्ट किया कि प्रशासन राज्य में शैक्षिक संस्थानों में हिजाब पहनने पर लगी पाबंदी हटाने पर बस विचार भर कर रहा है तथा सरकार के स्तर पर चर्चा करने के बाद निर्णय लिया जाएगा। उससे एक दिन पहले उन्होंने कहा था कि शैक्षिक संस्थानों में हिजाब पहनने पर कोई पाबंदी नहीं है तथा परिधान एवं भोजन संबंधी लोगों की पसंद व्यक्तिगत मसला है।

जाटों को साधने में जुटी भाजपा और कांग्रेस, मुद्दों को भुनाने का हो रहा प्रयास

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगले चुनावों में भाजपा और कांग्रेस दोनों ही जाटों को साधने में जुटे हुए है। यही वजह है कि फिलहाल ये जाटों से संबंधित मुद्दों को भुनाने में लगे हुए हैं। बता दें कि साल 2014 में भाजपा को जाटों का 25-30 फीसदी वोट मिला था। मगर 2019 के चुनाव में वोट शेयर घट गया। यही वजह है कि पिछले विधानसभा चुनाव में जाटों की नाराजगी का पार्टी को नुकसान भी झेलना पड़ा था। संसद परिसर में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की मिमिक्री विवाद और साक्षी मलिक के कुश्ती छोड़ने को जाट समाज से जोड़ने की कोशिश की जा रही है। उपराष्ट्रपति के समर्थन में भाजपा खड़ी हो गई तो साक्षी समेत अन्य पहलवानों के साथ कांग्रेस नेता आ गए हैं। जहां उपराष्ट्रपति धनखड़ ने अपने विवाद को जाट समाज का अपमान बताया। वहीं भाजपा ने भी इस विवाद को जाट समाज से जोड़ते हुए विपक्ष के खिलाफ देशव्यापी प्रदर्शन का एलान किया है। इधनपहलवानों के मुद्दे पर कांग्रेस ने खुलकर समर्थन दिया। कांग्रेस नेता भूपेंद्र सिंह हुड्डा और उनके बेटे व सांसद दीपेंद्र हुड्डा ने पहले बजरंग पुनिया और साक्षी से मुलाकात की। बाद में दोनों को प्रियंका गांधी के निवास पर ले गए। इसी मुद्दे पर कांग्रेस नेता रणदीप सुरजेवाला ने बाक्सर वीरेंद्र के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस कर भाजपा नेताओं को घेरा।

दरअसल, इन दोनों विवादों के बीच दोनों राजनीतिक दलों का निशाना कहीं और है। हरियाणा में 10 महीने बाद विधानसभा चुनाव हैं। उससे पहले लोकसभा के चुनाव भी तय हैं। हरियाणा की आबादी में 23-25 फीसदी जाट हैं। राज्य की 90 विधानसभा सीटों में से कम से कम 40 सीटों पर जाटों का महत्वपूर्ण असर है। साल 2014 में भाजपा को जाटों का 25-30 फीसदी वोट मिला था। मगर 2019 के चुनाव में वोट शेयर घट गया। यही वजह है कि पिछले विधानसभा चुनाव में जाटों की नाराजगी का पार्टी को नुकसान भी झेलना पड़ा था। भाजपा के धुरंधर जाट नेता कैप्टन अभिमन्यु, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ओपी धनखड़, सुभाष बराला और प्रेमलता को हार का मुंह देखना पड़ा। पॉलिटिक्स ऑफ चौधर के लेखक सतीश त्यागी कहते हैं कि 10 से 15 फीसदी जाट वोट अब भी भाजपा के साथ हैं।

इसीतरह मिमिक्री विवाद के बाद बैकफुट पर खड़ी कांग्रेस को पहलवानों के मुद्दों से उम्मीद जगी है। कांग्रेस साक्षी के कुश्ती छोड़ने

के मुद्दे को जाटों के अपमान से जोड़ रही है। एक तरह से कांग्रेस की मजबूरी भी है। हर चुनाव में दूसरी पार्टियों के मुकाबले कांग्रेस को जाट वोट शेयर ज्यादा मिलता रहा है। अगर वह पहलवानों के साथ नहीं खड़े होंगे तो उनके खिलाफ नाकरात्मक संदेश जा सकता है। इसलिए हरियाणा के कांग्रेस नेता पहलवानों के साथ खड़े हैं।

हर वर्ष 25 दिसंबर को पूरे विश्व में क्रिसमस मनाया जाता है। यह त्यौहार मुख्यतः ईसाई समुदाय के लोग मनाते हैं। क्रिसमस पर लोग अपना घर सजाते हैं। साथ ही कई तरह के पकवान भी बनाते हैं। इस त्यौहार से जुड़ी कई परंपराएं हैं जो लोग इस दिन निभाते हैं जैसे एक-दूसरे को तोहफे देना या प्रार्थना करना क्रिसमस की कुछ मान्यताओं के बारे में बता रहे हैं जो व्यक्ति के जीवन की सीख बन सकती हैं।

बहुत कुछ सिखाती हैं क्रिसमस परम्पराएं

सैंटा रहता कहां है?

बचपन में आपने भी सैंटा क्लॉस की कई कहानियां सुनी होंगी। छोटे से मोजे में कागज के एक टुकड़े पर ढ़ेर सारी विश लिखकर अगली सुबह उनके पूरे होने का इंतजार भी किया होगा। कई बार इस ख्याल ने आपका दिल भी दुखाया होगा कि क्या सैंटा क्लॉस सच में होता है या बस यह कहानियों में जिंदा है। तो चलिए आज आपको बता ही देते हैं कि असली सैंटा क्लॉस आखिर कहां रहता है।

फिनलैंड में बसा

फिनलैंड में एक जगह है रोवानिएमी, माना जाता है कि यहीं पर सैंटा विलेज है । यहां कड़ाके की ठंड पड़ती है। 6 महीने दिन और 6 महीने रात वाला यह देश 12 महीने बर्फ की चादर से ढका रहता है। रोवानिएमी में एक छोटा सा गांव है जिसे सैंटा विलेज के नाम से पुकारा जाता है। इस गांव में एक लंबी सफेद दाढ़ी वाला, लाल रंग के कपड़े पहने हुए एक व्यक्ति रहता है, जिसे लोग रियल सैंटा क्लॉज कहते हैं। इस गांव की खासियत है कि यहां घुसते ही लकड़ी से बनी झोपड़ियां नजर आती हैं। यहां का हर एक नजारा बचपन में सुनी कहानियों को हकीकत में होने का अहसास कराता है।

सैंटा की हट

इस गांव में एक ऐसी हट है जिसमें सिर्फ सैंटा और उनकी प ी रहते हैं। लाल और सफेद रंग से सजी सांता की झोपड़ी में खास चीज दूर से ही दिखाई देती है और वो है नन्हें बच्चों के ढ़ेर सारे खत। इन खतों को सांता और उनकी वाइफ बहुत संभाल कर रखते हैं। सांता की हट में एक हिस्सा ऐसा है जहां से सांता क्लॉस लोगों से मिलता है। जिसे सैंटा का ऑफि स कहा जाता है। खास बात यह है कि सैंटा विलेज घूमने आए लोग यहां सैंटा से मिलने के अलावा उससे बातें और तस्वीर भी खिंचवा सकते हैं। हालांकि सांता हट में घुसने का तो आपको कोई चार्ज नहीं देना होता लेकिन वहां खिंची फोटो सांता के पोस्ट ऑफि स से कुछ पैसे देकर खरीदनी पड़ती है।

सांता आईस पार्क

सांता का यह पार्क उनकी हट से कुछ ही दूरी पर बना हुआ है। इस पार्क में एंट्री करने के लिए आपको थोड़ी सी कीमत एंट्री फ्रीस के रूप में चुकानी होगी। अच्छी बात यह है कि इसके बाद पूरे दिन कितनी ही बार इस पार्क में जा सकते हैं। दिन खत्म होते ही इस टिकट की वेलेडिटी भी खत्म हो जाती है। इस पार्क में तीन खास जगह हैं, एक जहां बर्फ के झूले हैं,दूसरा जहां छोटा सा आईस हाउस लोगों के बैठने के लिए बनाया गया है और तीसरा खास हिस्सा बॉनफ ायर के लिए तैयार किया गया है, जहां बैठकर लोग आग में हाथ सेंकते हैं।

बच्चों को याद रहे ये क्रिसमस

पैरेंट्स की सबसे बड़ी ख्वाहिश रहती हैं कि वो अपने बच्चों को कुछ इस तरह के गिफ्ट दें जो उनके लिए जादुई और दिल को छुने वाले हो। ऐसे गिफ्ट के लिए पैरेंट्स तरह-तरह के आइडिया तलाशते हैं। बच्चे क्रिसमस पर ऐसा गिफ्ट चाहते हैं जिसे देखकर उनकी आंखों में चमक आ जाए और वो उसे देखते ही रहे। अगर आप भी इस क्रिसमस अपने बच्चों को खुश रखना चाहते हैं तो हम आपको बताते हैं कि आप अपने बच्चे को कैसे क्रिसमस पर खुश कर सकते हैं।

क्रिसमस ट्री

प्राप्त जानकारी के अनुसारए क्रिसमस का त्योहार एक चीज के बिना अधूरा माना जाता है। वह चीज है क्रिसमस ट्री। बता दें कि घर में मौजूद हरे-भरे क्रिसमस ट्री को खुशहाली का प्रतीक माना जाता है। साथ ही मान्यता यह भी है कि इसे घर में रखने से सभी प्रकार की दुःख और नकारात्मकता दूर हो जाती है। ऐसे में इस दिन घर में मौजूद हरे-भरे क्रिसमस ट्री को भी सजाया जाता है।

मोमबत्ती

जिस तरह हिंदू धर्म में दीपक जलाकर देवी-देवताओं की पूजा होती है। उसी तरह क्रिसमस पर मोमबत्ती जलाकर लोग प्रभु यीशु की प्रार्थना करते है। इसके पीछे की मान्यता है कि मोमबत्ती से दुख के अंधकार दूर होते हैं और सुख के प्रकाश फैलता है। रंग बिरंगी मोमबत्तियों का अपना अलग ही महत्व होता है।

मोजे

क्रिसमस त्योहार की सजावट में मौजे का भी इस्तेमाल किया जाता है। साथ ही इस परंपरा के पीछे एक दिलचस्प कहानी मौजूद है। माना जाता है कि, एक गांव में एक गरीब व्यक्ति रहता था। पैसों का अभाव होने के कारण वह अपनी तीन बेटियों का विवाह नहीं करवा पा रहा था। तब सेंट निकोलस ने उस गरीब की मदद के लिए सोने से भरी पोटली चिमनी के जरिए नीचे फेंक दी, जो एक मोजे में जा गिरी। तब से लेकर क्रिसमस के दिन चिमनी के पास मौजे लटकाए जाते हैं।

घंटियां

क्रिसमस से एक दिन पहले क्रिसमस ट्री को सुंदर तरीके से सजाया जाता है जिसमें घंटियों का इस्तेमाल मुख्य रूप से किया जाता है। मान्यता है कि घर में घंटियों को रखने से सभी प्रकार की नेगेटिविटी दूर रहती है और इन्हें बजाकर ईसाह मसीह का जन्मदिन मनाया जाता है।

भगवान को धन्यवाद

प्रार्थना तो हम सभी करते हैं। प्रार्थना करते समय ऐसा माना जाता है कि हम ईश्वर से बात करते हैं। हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। क्रिसमस की रात ईसाई समुदाय के लोग चर्च जाते हैं और यीशू मसीह से प्रार्थना करते हैं। साथ ही जीवन के लिए उनका धन्यवाद भी करते हैं। इस तरह व्यक्ति अपने मन से नकारात्मकता निकाल सकते हैं।

मोमबत्ती से रोशनी

इस दिन चर्च में मदर मेरी के सामने मोमबत्तियां जलाई जाती हैं। यह परंपरा बहुत पुरानी है। मोमबत्ती जलाकर लोग अपने जीवन की सफ लता एवं खुशियों की कामना करते हैं। साथ ही लोगों के जीवन से अंधकार मिटाने और प्रकाश लाने की भी आशा करते हैं।

परिवार का महत्व

आजकल की भागदौड़ ज़री जिंदगी में, ज्यादातर लोग अपने परिवार और दोस्तों के साथ वक्त बिताने को तरसते हैं। इस साल कोरोना वायरस की वजह से लगे लॉकडाउन में हम में से कई लोगों को परिवार के साथ काफ ी समय बिताने को मिलाए तो वहीं, दोस्तों से नहीं मिल पाए। वहीं, कुछ लोगों के साथ उल्टी हुआ, जो परिवार से अलग दूसरे शहर में रहते हैं। सभी से मिलने के लिए क्रिसमस से बेहतर त्यौहार और कौन सा होगा। इस दिन अपने परिवार और दोस्तों के साथ मिलकर खाना खाएं और पार्टी करें। इस दौरान सभी एक-एक कर ये बता सकते हैं कि उन्हें परिवार के बारे में क्या पसंद है या फि र परिवार के एक-एक इंसान के बारे में एक-एक कर कुछ कहें।

धार्मिक मान्यताओं अनुसार, इस दिन ईसा मसीह का जन्म हुआ था। इस दिन लोग क्रिसमस ट्री को सजाते हैं, एक दूसरे को गिफ्ट देते है। क्रिसमस पर केक, घंटी, मोमबत्ती, मोजे सभी का अपना अलग ही महत्व है। खुशियों के इस त्योहार की कई अनूठी और दिलचस्प परंपराएं हैं।

क्यों मनाया जाता है यह क्रिसमस?

वैसे तो बाइबिल में यीशु मसीह के जन्म की तारीख नहीं दी गई है। इसलिए मान्यताओं के आधार पर ही इसे मनाया जाता है। इस दिन को क्रिसमस के रूप में मनाने को लेकर लोगों में बहुत सारे मतभेद भी हैं, पर ईसाई धर्म की मान्यता के अनुसार 25 दिसंबर को ही प्रभु यीशु मसीह का जन्म हुआ था, इसलिए इस दिन को प्रभु यीशु मसीह के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। वहीं यीशु मसीह, जिन्हें जीसस क्राइस्ट के नाम से भी जाना जाता है, उनके जन्म को लेकर ये भी मान्यता है कि मां मरियम को सपने में प्रभु के पुत्र यीशु रूप में प्राप्त होने की भविष्यवाणी हुई थी। इसी के बाद वे गर्भवती हुईं और फिर 25 दिसंबर को यीशु मसीह का जन्म हुआ था।

यह भी है मान्यता

कहते हैं कि 336 ईसवी पूर्व में वहां के सबसे पहले ईसाई रोमन सम्राट जो कि ईसा मसीह के अनुयायी थे, जिन्होंने सबसे पहली बार 25 दिसंबर को जीसस क्राइस्ट के जन्मदिवस के रूप में मनाया था। आगे चलकर कुछ सालों बाद पोप जुलियस ने इस दिन को जीसस क्राइस्ट के जन्मदिवस के रूप में मनाने की आधिकारिक घोषणा भी कर दी। तभी से 25 दिसंबर को जीसस क्राइस्ट के जन्मदिवस के रूप में मनाने की परंपरा चली आ रही है। हालांकि, इस विषय पर आगे भी विवाद बना रहा, लेकिन ये भी सच है कि मान्यताओं के आधार पर इसी दिन को क्रिसमस के रूप में मनाया जाता है।

क्या है क्रिसमस फेस्टिवल ?

क्रिसमस दो शब्दों क्राइस्ट और 'मास' शब्द से मिलकर बना है. जिसका अर्थ है ईसा मसीह का पवित्र महीना। हर साल 25 दिसंबर को दुनियाभर में क्रिसमस मनाया जाता है। इस दिन को ईसाई धर्म के संस्थापक यीशु मसीह के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। क्रिसमस की तैयारी लोग एक महीने पहले से ही करने लग जाते हैं। इसके लिए वे अपने घर की सजावट भी करवाते हैं और कुछ लोग तो खुद ही अपना घर अपने हाथों से सजाते हैं। इतना ही नहीं बहुत सारे लोग इस दिन सामूहिक पार्टी का आयोजन करते हैं, जिसमें सभी साथ मिलकर कैंडल जलाकर यीशु मसीह से प्रार्थना करते हैं और फिर केक काटकर खूब एंजॉय करते हैं, गाना गाते हैं, डांस करते हैं और सबके साथ मिलकर लजीज व्यंजनो का आनंद लेते हैं। इन सब के बाद छोटे बच्चों को सेंटा का इंतजार रहता हैं और फिर उनमें से ही कोई सेंटा बनकर पार्टी में आए सभी लोगों को गिफ्ट देता है।

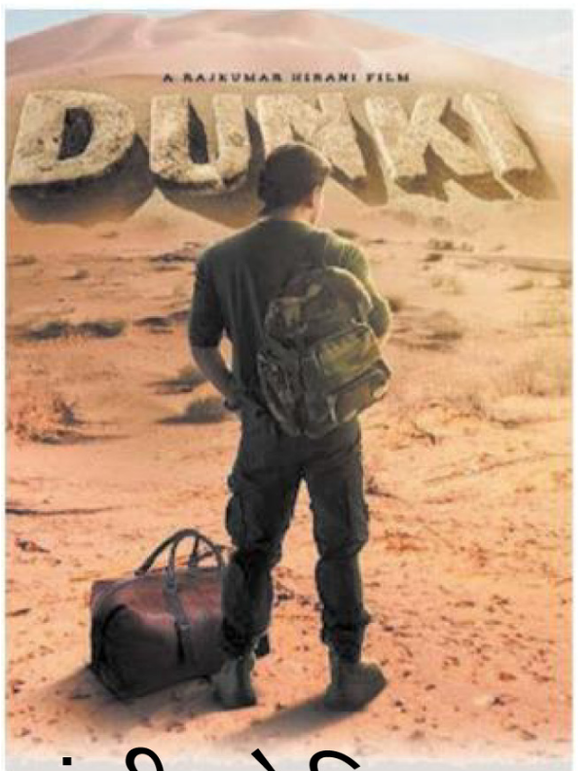

डंकी को मिल रहा ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड से भरपूर प्यार

शाहरुख खान की मचअवेटेड फिल्म डंकी 21 दिसंबर को सिल्वर स्क्रीन पर रिलीज हो चुकी है। राजकुमार हिरानी की डंकी में जहां तरफ प्यार और दोस्ती की कहानी दिखाई गई है, तो वहीं फिल्म में उन एनआरआई की कहानी भी पेश करती है जो विदेश में रहते हैं और अपने देश और वतन को याद करते हैं। ऐसे में यह फिल्म ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में रहने वाले लाखों हिंदुस्तानियों के दिलों को छू गई है। यही वजह है कि ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड से शाहरुख की इस फिल्म को भारी प्यार मिल रहा है। वहीं बॉक्स ऑफिस पर भी फिल्म अच्छा प्रदर्शन कर रही है। इतना ही नहीं, इस साल शाहरुख खान के लिए इस क्षेत्र में तीसरी ब्लॉकबस्टर ओपनिंग भी बन गई है। डंकी में शानदार कास्ट है, जिसमें शाहरुख खान के साथ-साथ सुपर टैलेंटेड अभिनेता बोमन ईरानी, तापसी पन्नू, विक्की कौशल, विक्रम कोचर और अनिल ग्रोवर हैं। वहीं डंकी के ओपनिंग डे के कलेक्शन की बात करें तो फिल्म ने पहले दिन शाहरुख की फिल्म ने 30 करोड़ रुपये की कमाई की थी।

सालार ने पहले दिन ही पार किया 100 करोड़ का आंकड़ा

प्रभास की फिल्म 'सालार' ने बॉक्स ऑफिस को हिला कर रख दिया है। पहले ही दिन फिल्म ने 100 करोड़ का आंकड़ा पार करते हुए कई फिल्मों का रिकॉर्ड तोड़ डाला है। 'सालार' के साथ प्रभास ने अपनी फिल्म 'बाहुबली' का भी रिकॉर्ड तोड़ दिया है। भारत में करीब 112 करोड़ और वर्ल्डवाइड 175 करोड़ का कलेक्शन किया है। 'सालार' के मेकर्स को फिल्म से काफी उम्मीद थी और ये फिल्म उसपर खरी उतरी है। तमाम ट्रेड एनालिस्ट ने अनुमान लगाया था कि ये फिल्म ओपनिंग डे पर कमाल करेगी। फिल्म को साउथ में सबसे ज्यादा देखा गया है। कर्नाटक में प्रभास स्टारर ने 12 करोड़, केरल में 5 करोड़, तमिलनाडु में 4.50 करोड़ का बिजनेस किया है। रिपोर्ट्स के अनुसार फिल्म के 30 लाख से अधिक एडवांस टिकट बिके थे। जिससे फिल्म ने पहले ही 95 करोड़ का बिजनेस कर लिया था। सैकनिल्क के मुताबिक फिल्म की दूसरे दिन की एडवांस बुकिंग 12.77 करोड़ की हुई। फिल्म भारत की सबसे बड़ी ओपनिंग करने वाली फिल्म साबित हो सकती है।

'बाहुबली' के बाद ये फिल्म प्रभास की सबसे बड़ी हिट साबित होने वाली है। प्रभास की इससे पहले आई फिल्में जैसे 'आदिपुरुष', 'साहो' बॉक्स ऑफिस पर कमाल दिखाने में असफल रही थी। लेकिन इस फिल्म को लेकर दर्शकों का अलग ही क्रेज देखने को मिल रहा है। सोशल मीडिया पर फिल्म और प्रभास की खूब तारीफ हो रही है। प्रभास स्टारर 'सालार', शाहरुख खान की 'डंकी' के साथ रिलीज हुई। इस फिल्म ने पहले एडवांस टिकट बुकिंग के मामले में शाहरुख खान स्टारर को पीछे छोड़ा और अब ओपनिंग डे कलेक्शन में भी 'सालार', 'डंकी' से आगे निकल गई है।

खुद को टिपिकल स्टार किड नहीं मानती अलीजेह

एक्टर सलमान खान के परिवार से उनकी भांजी अलीजेह अग्निहोत्री ने हाल ही में फिल्म फर्रे से अपना डेब्यू किया था। इस फिल्म को उनके पिता और निर्माता अतुल अग्निहोत्री ने प्रोड्यूस किया। जामताड़ा फेम सौमेंद्र पाधी फर्रे के डायरेक्टर थे। अब ट्रेड के हवाले से खबर आ रही है कि अतुल अग्निहोत्री अपनी बिटिया को लेकर एक और फिल्म प्लान कर रहे हैं। ट्रेड पंडितों के मुताबिक अतुल अग्निहोत्री ने दरअसल अपने बैनर से दो फिल्में अपनी बिटिया को लेकर प्लान की थीं। एक सौमेंद्र पाधी की फर्रे थी और दूसरी वो बनाने वाले हैं। संयोग से फर्रे पहले बन गई। दूसरी फिल्म की डायरेक्टर मेघना गुलजार हो सकती हैं।

फिल्म इंडिया की एक मशहूर ऐथलीट की बायोपिक होगी। हालांकि इस वक्त उस प्रोजेक्ट के बारे में कुछ बताया नहीं जा रहा है। बायोपिक किस ऐथलीट पर आधारित होगी? फिल्म में बाकी स्टार कास्ट कौन होंगे? इन सब विषयों पर अनाउंसमेंट जल्द ही होगी। फिलहाल फर्रे पर फ्रेंचाइजी बनाने की निर्माताओं की कोई प्लानिंग नहीं है। कहानी पहले ही पार्ट में कंप्लीट कर दी गई थी। जो ऐथलीट की बायोपिक होगी, उसे भी फर्रे की तरह सलमान खान फिल्म्स को-प्रोड्यूस करेगी।

फर्रे के रिस्पॉन्स से कितनी खुश हैं?
मुझे इतने पाजिटिव रिस्पॉन्स की उम्मीद नहीं थी। हमें इस फिल्म पर बहुत गर्व है और हम काफी खुश हैं।

फर्रे से पहले क्या आपने ऑडिशन दिए हैं? यदि हां, तो वे ऑडिशन फिल्मों के लिए थे या विज्ञापनों के लिए?
हां बिल्कुल। मैंने शो, फिल्मों और विज्ञापनों के लिए ऑडिशन दिए हैं। ये जानने के लिए कि क्या मैं इस भूमिका के लिए सही हूं कि नहीं। मेरे ख्याल से हर अभिनेता को निर्देशक के साथ ऑडिशन या रीडिंग करनी पड़ती है। मैंने भी की।

फर्रे के बाद से आपको निर्देशकों और निर्माताओं से कितने कॉल आए हैं? कहीं बातचीत फाइनल हुई?
इस फिल्म के बाद मुझे बहुत प्यार मिला है और मैं बेहद आभारी हूं।

नियति सिंह के किरदार में ढलने के लिए आपने निर्देशक के अलावा किसकी मदद ली?
हमारे निदेशक सौमेंद्र सर ने एमके रैना सर के साथ वर्कशॉप कंडक्ट की थी। उनसे मिली ट्रेनिंग और वर्कशॉप ने मुझे नियति सिंह के किरदार में ढलने में काफी मदद की।

आपने किस उम्र में एक्ट्रेस बनने का सोचा?
एक्ट्रेस बनने का डिसिजन एक स्लो डिसिजन था। हां, मैंने ये जरूर सोच लिया था कि 20 साल के आस-पास क्या करना चाहूंगी।

जब आपने पहली बार अपने माता-पिता को बताया कि आप फिल्म इंडस्ट्री में आना चाहती हैं, तो उनका रिएक्शन क्या था?
वे अच्छे हैं। वे हमेशा सबसे ज्यादा सपोर्टिंग माता-पिता रहे हैं। यहां तक कि एक समय में जब मैं अपने बारे में आश्वस्त नहीं थी, उस दौरान वे ही मुझे मजबूत बने रहने की सलाह दिया करते थे।

फिल्म इंडस्ट्री का एक्सपीरियंस कैसा रहा है?
यहां घर जैसा महसूस होता है। मुझे अपने जीवन में किसी भी चीज से ज्यादा सेट पर रहना पसंद है।

क्या फिल्म इंडस्ट्री में कॉम्पिटिशन है?
मैं प्रतिस्पर्धी नहीं हूं और सिर्फ अपने बारे में सोचती हूं।
बिल्कुल नहीं। किसी ने भी मुझे उस दबाव का एहसास नहीं कराया। सेट पर मौजूद क्रू को इस बात की परवाह नहीं थी कि मैं किससे संबंधित हूं, उन्हें इस बात की परवाह थी कि हमें क्या काम देना है। दबाव बाहर से आता है। इस फिल्म की शूटिंग करना बेहद सुखद और शांतिपूर्ण अनुभव रहा।

स्टार परिवार से आने के बावजूद भी आप खुद को स्टार किड नहीं मानती हैं। ऐसा क्यों?
मैं खुद को एक सुपरस्टार के बच्चे जितना प्रासंगिक नहीं मानती। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं इंडस्ट्री किड नहीं हूं। सच कहूं तो लोग बचपन से मुझ पर नजर नहीं रख रहे थे, जैसा कि वे किसी बड़े सेलिब्रिटी बच्चे के ऊपर रखते होंगे। मुझे अपनी प्रेजेंस दर्ज करानी थी। हालांकि मुझे नहीं लगता कि इंडस्ट्री मुझमें बड़े स्टार्स के बच्चों की तरह दिलचस्पी रखती है।

विरासत में मिला लोगों को खुश करने का स्वभाव

अभिनेत्री अनन्या पांडे इन दिनों अपनी आगामी फिल्म खो गए हम कहां की रिलीज को लेकर सुर्खियों में हैं। अभिनेत्री की यह फिल्म अर्जुन वरैन सिंह के निर्देशन में बनी है। हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में अभिनेत्री ने उन दिनों को याद किया, जब वह अपने शुरुआती करियर में सबका प्यार पाना चाहती थीं। इसके अलावा अभिनेत्री ने अपने पिता चंकी पांडे के बारे में भी बात की। अनन्या ने अपने पिता चंकी पांडे के बारे में बात करते हुए कहा कि लोगों को खुश करने का स्वभाव उन्हें अपने पिता से विरासत में मिला है। अभिनेत्री ने कहा, मैं बिल्कुल उनके जैसी हूं, जब मैंने अपने करियर की शुरुआत की थी, तो यही सोचती थी कि मैं सबसे प्यार करूंगी, लेकिन इंडस्ट्री में मुझे किसी से प्यार नहीं मिला। मेरे समझ नहीं आता है कि क्यों कोई मुझसे प्यार क्यों नहीं करता। अभिनेत्री ने बातचीत को आगे बढ़ाते हुए कहा, जब मुझे एहसास हुआ कि हर किसी को अपने जैसा नहीं बनाया जा सकता, तभी से मैंने दुसरों से प्यार पाने की इच्छा को बदल दिया है। अब मैं सिर्फ अपने परिवार और खुद से प्यार करती हूं। मेरा ये नजरिया इस साल से ही बदला है, क्योंकि मैं ओरी की तरह नहीं दिखना चाहती हूं। मैं अब सिर्फ खुद पर काम करना चाहती हूं। मैं एक अच्छे इंसान की तरह अपना जीवन जीना चाहती हूं। अनन्या पांडे के वर्कफ्रंट की बात करें तो अभिनेत्री फिल्म खो गए हम कहां में नजर आने वाली हैं। इस फिल्म में अनन्या के अलावा सिद्धांत चतुर्वेदी और आदर्श गौरव मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। इस फिल्म की कहानी तीन दोस्तों के जीवन पर आधारित है।

शाहरुख ने अपकमिंग फिल्म के बारे में दिया हिंट

शाहरुख खान स्टारर फिल्म 'डंकी' कल यानी 21 दिसंबर को रिलीज कर दी गई है। 2023 में शाहरुख की कुल 3 तीन फिल्में रिलीज हुई। इसी बीच उन्होंने राया अबिराचेड के साथ चैट में अपनी आने वाली फिल्म के बारे में हिंट दिया है। वो मार्च-अप्रैल तक अपनी नई फिल्म की शूटिंग शुरू करेंगे। उन्होंने बताया कि अपनी अगली फिल्म में वो बुजुर्ग व्यक्ति का रोल प्ले करेंगे। इससे पहले भी शाहरुख वीर-जारा और जवान जैसी फिल्मों में बुजुर्ग व्यक्ति के किरदार में दिखे हैं। लेकिन इस फिल्म में पहली बार स्क्रीन पूरी फिल्म में बुजुर्ग हीरो की भूमिका में नजर आएंगे। चैट के दौरान जब उनसे उनकी अगली फिल्म के बारे में पूछा गया। इसपर एक्टर ने कहा- मुझे लगता है कि मैं अब मार्च-अप्रैल में एक फिल्म की शूटिंग शुरू करूंगा। उन्होंने कहा- मैं इस फिल्म में बुजुर्ग हीरो की भूमिका में नजर आऊंगा। ऐसी अफवाह है कि शाहरुख जल्द ही अपनी बेटी सुहाना के साथ एक फिल्म में काम कर सकते हैं। इसपर कोई पुष्टि नहीं की गई है। सुहाना ने हाल ही में जोया अख्तर की द आर्चीज से अपनी शुरुआत की और अभी तक अपनी अगली फिल्म की अनाउंसमेंट नहीं की है।

रानी मुखर्जी ने दिया मर्दानी 3 को लेकर अपडेट

बॉलीवुड एक्ट्रेस रानी मुखर्जी की फिल्म मर्दानी साल 2014 में रिलीज हुई थी। इस फिल्म में रानी मुखर्जी ने एक सशक्त पुलिस अधिकारी शिवानी शिवाजी रॉय की भूमिका निभाकर लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया था। मर्दानी की सफलता के बाद साल 2019 में मर्दानी 2 बनाई गई। यह फिल्म भी बॉक्स ऑफिस पर हिट साबित हुई थी। बीते काफी समय से मर्दानी 3 को लेकर चर्चा चल रही हैं। हाल ही में रानी ने मर्दानी 3 को लेकर बात की है। एक्ट्रेस ने कहा, एक अभिनेत्री के रूप में मैं हमेशा मानती हूं कि हम कोई फिल्म इसलिए नहीं करना चाहते, क्योंकि वह अच्छी लगती है। हमें तब फिल्म करनी चाहिए जब स्क्रिप्ट अच्छी हो और जब हम ऐसी फिल्म बनाना चाहते हों जो बदलाव ला रही हो। रानी मुखर्जी ने कहा, यदि कहानी में वह दम नहीं है तो हम मर्दानी 3 नहीं बना सकते हैं। यह कुछ ऐसा होना चाहिए जिससे लोग आज जुड़ें, लड़कियों को यह सशक्त लगे। तभी हम मर्दानी 3 बना सकते हैं। इसे सिर्फ इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि, यह रोमांचक लगता है। रानी मुखर्जी ने बताया कि मर्दानी फ्रेंचाइजी की फिल्म केवल दर्शकों के प्यार की वजह से आगे बढ़ रही है, क्योंकि महिला प्रधान फ्रेंचाइजी फिल्म का चलना बहुत कठिन होता है। इसे आगे बढ़ाने के लिए दर्शकों का प्यार चाहिए। जहां तक मर्दानी 3 की बात है, तो मैं खुद वापस आना चाहती हूं।

अच्छी कहानी से चलती हैं फिल्में

अभिनेता आमिर खान इन दिनों फिल्मों से ज्यादा निजी जिंदगी को लेकर सुर्खियों में छाए हुए हैं। अभिनेता बड़े पर्दे पर वापसी के लिए तैयार हैं। बीते दिनों एक इंटरव्यू में अभिनेता ने एलान किया था कि वे सितारे जमीन पर नामक आगामी फिल्म में अभिनय करेंगे। आमिर इस फिल्म में अभिनय के साथ-साथ निर्माण का कार्य भी करेंगे। हाल ही में दिए इंटरव्यू में आमिर खान ने एडल्ट फिल्मों पर अपनी राय व्यक्त की। आमिर ने कहा, जब हम फिल्में बनाते हैं, तो एडल्ट वर्ग को देखकर ही फिल्म बनाते हैं, क्योंकि आज के समय में इस उम्र के दर्शक ही फिल्म देखते है। गाली, सेक्स और हिंसा वाली फिल्मों के चलन पर आमिर खान ने कहा, मुझे नहीं लगता कि फिल्मों में इस तरह का कभी चलन बनेगा। एक निर्माता को एडल्ट फिल्म बनाने के लिए बहुत साहस की आवश्यकता होती है। निर्माता जानते हैं कि इस तरह की फिल्मों को देखने के लिए दर्शक सिनेमाघरों में नहीं आएंगे। इस तरह की फिल्मों को बनाना एक कठिन निर्णय है।

कहानी से चलती हैं फिल्में

अभिनेता ने आगे कहा, मेरे हिसाब से फिल्में ना तो गाली पर, ना ही सेक्स और हिंसा पर चलती है। फिल्मों में चाहें आप कितनी भी इस तरह की चीजें डाल दीजिए, दर्शकों को जब तक फिल्म की कहानी, सीन और किरदार अच्छे नहीं लगेंगे, तब तक फिल्म नहीं चलेगी। फिल्म कहानी पर टिकी होती है। कहानी अच्छी होगी, तो फिल्म को हिट होने से कोई नहीं रोक सकता।

आमिर का वर्कफ्रंट

बता दें कि आमिर ने अपनी 2022 की फिल्म लाल सिंह चड्ढा की रिलीज के बाद अभिनय से ब्रेक ले लिया था। हालांकि, वह निर्माता के तौर पर लगातार एक्टिव हैं। अभिनेता एक निर्माता के रूप में तीन फिल्में कर रहे हैं। आमिर ने फिल्म लापता लेडीज का निर्माण किया है, जो 5 जनवरी को रिलीज होगी। इसके अलावा अभिनेता राजकुमार संतोषी और सनी देओल के साथ लाहौर 1947 में काम कर रहे हैं।

गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय में 7914 छात्र-छात्राओं को मिली डिग्री, दीक्षांत समारोह का हुआ भव्य आयोजन

नेशन फर्स्ट की भावना के साथ आगे बढ़ें छात्र : जगदीप धनखड़

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। गौतमबुद्ध यूनिवर्सिटी का पहला दीक्षांत समारोह धूमधाम से संपन्न हो गया। दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ उपस्थित रहे।

दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय के 8 विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल प्रदान किया गया। वहीं 8 संकायों के विद्या वाचस्पति, स्नातकोत्तर और स्नातक के 7914 छात्र-छात्राओं को उपाधियां प्रदान की गईं। इसके अलावा म्यांमार, वियतनाम, लाओस, थाईलैंड और ताइवान के पांच विदेशी छात्रों को भी उपाधियां प्रदान की गईं।

दीक्षांत समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि योगी आदित्यनाथ आज पर्सन ऑफ एक्शन के प्रतीक बन चुके हैं। हम सब जानते हैं कि यूपी में पहले क्या हालात थे। कानून व्यवस्था और विकास की दृष्टि से ये प्रदेश सबकी चिंता का विषय था। मगर आज यूपी देश ही नहीं दुनिया में लॉ एंड ऑर्डर को लेकर रोल मॉडल बन चुका है। उन्होंने कहा कि लंबे समय तक वकालत के पेशे में रहने के कारण उनका उद्योग जगत से गहरा नाता रहा है और उन्हें ये बात कहने में खुशी होती है कि यूपी आज प्रीमियम कैटेगरी के उद्योगों के लिए फेवरेट डेस्टिनेशन बन चुका है।

छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान भी दें : योगी आदित्यनाथ

उन्होंने विद्यार्थियों से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, क्वांटम कम्प्यूटिंग में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया और कहा कि आने वाले समय में भारत तकनीकी का हब बनने जा रहा है। उन्होंने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को नए संसद भवन आने का निमंत्रण भी दिया। साथ ही उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे नेशन फर्स्ट की भावना के साथ अपनी जिंदगी में आगे बढ़ें।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि दीक्षांत उपदेश भारत की गुरुकल परंपरा से आई है, जिसमें एक गुरु शिक्षा के उपरांत अपने शिष्य को उपदेश देता है कि तुमने जो भी ज्ञान प्राप्त किया है, उसका सार यही है कि सत्य बोलो और धर्म के मार्ग पर चलो। बुद्ध भी कहते हैं कि धर्म की शरण में जाओ। धर्म पूजा पद्धति नहीं है, बल्कि सदाचार, नैतिक मूल्य और कर्तव्य का समन्वित रूप है। ये हर देश, काल, परिस्थिति में समान रहता है। उपासना पद्धति देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है। मगर धर्म शाश्वत व्यवस्था है। बुद्ध ने अपने प्रत्येक अनुयायियों को बुद्ध यानी बुद्धि-विवेक की शरण में जाने के लिए कहा है। इसके अलावा उन्होंने संघ की शरण यानी टीम भावना के साथ कार्य करने के लिए कहा है। विश्वविद्यालय हो, उद्योग जगत हो या परिवार, टीम वर्क हमेशा परिणाम देता है। वही टीम परिणाम देती है जो वन लीडरशिप में कार्य करती है। बुद्ध का उपदेश मानवता के कल्याण का मार्ग खोलती है।

इस अवसर पर प्रदेश सरकार में औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी, लोक निर्माण विभाग के राज्यमंत्री बृजेश सिंह, पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह, जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा, कुलपति प्रो. रविन्द्र कुमार सिन्हा, डीन एकेडमिक प्रो. एमपी मलकानिया, प्राधिकरणों के मुख्य कार्यपालक अधिकारी व पुलिस विभाग, जिला प्रशासन एवं प्राधिकरण के वरिष्ठ अधिकारीगण, विश्वविद्यालय के फैकल्टी मैंबर्स और उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

5वें दिन यूपी जोड़ो यात्रा में शामिल रहे नोएडा के नेता

नोएडा (चेतना मंच)। महानगर कांग्रेस अध्यक्ष रामकुमार तंवर के नेतृत्व में नोएडा से सैकडों की संख्या में कांग्रेसी कार्यकर्ता कांग्रेस पार्टी की यूपी जोड़ो यात्रा

के 5वें दिन यात्रा में समिल हुए। यूपी जोड़ो यात्रा की सुरुवात बिजनौर जिले के नहटोर क़स्बा से प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के नेतृत्व में हुई। उसके बाद नूरपुर क़स्बे से यात्रा सूरू हुई तक़रीबन 19 किलोमीटर की यात्रा कृष्णा फ़ार्म हाउस से निकल कर बहरोट चोराह से मेन मार्केट व गाँवो से होती हुई नूरपुर तक पहुँची उसके बाद आज की यात्रा का समापन हुआ।

इस यात्रा में मुख्य रूप से नोएडा महानगर अध्यक्ष रामकुमार तंवर, ज़िला प्रभारी योगी जाटव, जिला अध्यक्ष दिनेश शर्मा, पीसीसी सदस्य देवेंद्र भाटी, पीसीसी सदस्य रिज़वान चौधरी, पीसीसी सदस्य सोनू खारी प्रधान, किसान कांग्रेस जिला अध्यक्ष गौतम अवाना, दादरी विधानसभा पूर्व प्रत्याशी दीपक भाटी, सलोनी सोलंकी, जिला उपाध्यक्ष,व्यापार ज़िला अध्यक्ष अभिषेक जैन,प्रदेश सचिव पुरशोत्तम नागर, उदय नागर, ज़िला उपाध्यक्ष रामभरोसे शर्मा सोशल मीडिया जिला अध्यक्ष हेमचंद नागर, दलित कांग्रेस जिला अध्यक्ष धर्म सिंह वाल्मीकि, जीतू शर्मा, सचिव आशुतोष पडरू आदि कांग्रेस कार्यकर्ता मोजूद रहे।

स्वस्थ भारत, विकसित भारत के बने भागीदार : डा.महेश शर्मा

ग्रैंड कैलाश मैराथन 2023 में एक हजार लोगों ने लगाई दौड़

नोएडा (चेतना मंच)। कैलाश अस्पताल समूह और वाईएसएस फाउंडेशन की ओर से रविवार को ग्रैंड कैलाश मैराथन 2023 का आयोजन हुआ। ''न्यू भारत फिट भारत'' उद्देश्य के साथ देश के अलग अलग हिस्सों से आये प्रतिभागियों से सुसज्जित मैराथन को कैलाश अस्पताल समूह की निदेशक डा. पल्लवी शर्मा और डा. श्रीकांत ने सुबह 06:30 हरी झंडी दिखाकर मैराथन और वाकथॉन को शुरू किया। 1,3,5 और 10 किलोमीटर की दौड़ में एक हजार से अधिक लोग दौड़े।

मैराथन में मुख्य रूप से साउथ दिल्ली रनिंग ग्रुप, एनसीआर रनिंग ग्रुप, नोएडा रनिंग ग्रुप और स्टूडेंट्स रनिंग ग्रुप के धावकों ने सबको प्रभावित किया। साथ ही नोएडा रेसिडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन, एनजीओ और स्कूली छात्र - छात्राओं ने प्रतिभागी बनकर मैराथन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ग्रैंड कैलाश मैराथन 2023 के सफल आयोजन का श्रेय प्रतिभागियों और कैलाश टीम को देते हुए निदेशक डा. पल्लवी शर्मा ने कहा कि मैराथन में शामिल हुए बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों की उपस्थिति ने मुझे और अधिक प्रेरित कर दिया है।

इस अवसर पर निदेशक डा. श्रीकांत शर्मा ने कहा कि हमें स्वास्थ्य के प्रति ध्यान रखने की जरूरत है, निरंतर बदलती दैनिक क्रियाओं और कार्यों के बोझ से हमारा मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। अपने रोजाना की जीवनशैली में हमें व्यायाम, योग, मेडिटेशन को जरूर शामिल करना चाहिए, जिससे हम स्वस्थ समाज की रचना को प्राप्त कर सकें।

पूर्व केंद्रीय मंत्री, भारत सरकार एवं गौतमबुद्ध नगर सांसद डा. महेश शर्मा ने कार्यक्रम में अतिविशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित होकर प्रतिभागियों का मनोबल बढ़ाया और विजेताओं को पुरस्कृत किया। उन्होनें कहा कि लोगों के उत्साह को देखकर उन्हें विश्वास है कि आने वाले समय में हम सभी मिलकर समाज और देश को पूर्णतया स्वस्थ रखने के संकल्प को निश्चित ही पूरा कर लेंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चलाये जा रहे महत्वपूर्ण अभियानों में से एक ''स्वस्थ भारत, विकसित भारत'' में हम सबकी जन भागीदारी भी जरूरी है।

ग्रेटर नोएडा में मकान गिरने से कई दबे, दो बच्चों की मौत

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। दादरी क्षेत्र के समाधिपुर में एक निर्माणाधीन मकान के

अचानक भरभराकर गिरने का समाचार मिला है। जिस समय यह मकान गिरा उस समय वहां मौजूद लोगों में 6 लोग मलवे में दब गए। इस हादसे में 2 बच्चों की मौत होने का भी समाचार मिला है। वहां मौजूद लोगों ने अपने स्तर से ही बीच बचाव कार्य शुरू कर दिया और साथ के साथ पुलिस को भी सूचना दे दी है। लोगों के साथ मौके पर पहुंची पुलिस टीम भी बचाव कार्य में जुटी हुई है।

दादरी क्षेत्र के समाधिपुर में इस नव निर्माणाधीन मकान में निर्माण कार्य हो रहा था। और इसी दौरान यह मकान भरभराकर गिर पड़ा जिसके नीचे दबने वालों में दो बच्चों की मौत हो जाने से परिवार और आसपास मातम जैसा माहौल हो गया है। यह हादसे ऐसे ही होते रहेंगे जब तक लोग जागरूक नहीं होंगे। निर्माण कार्य के दौरान लोगों को अतिरिक्त शतर्कता बरतनी चाहिए जिससे कोई अनहोनी से बचा जा सके।

सितंबर में ऐसी ही घटना महाराष्ट्र भिवंडी में भी हुई थी जहांपर दो मंजिला इमारत गिर गई थी। इसके मलबे में दबने से 2 लोगों की मौत हो गई थी। यह घटना भिवंडी में दरगाह रोड पर हुई सितंबर माह में हुई थी। काफी मशक्कत के बाद टीम ने मलबे में दबे लोगों को निकाला। हालांकि, तब तक दो लोगों की मौत हो गई थी। हालांकि यह बिल्डिंग काफी पुरानी थी।

ठंड में कोई भी खुले आसमान में न सोने पाए

मुख्यमंत्री ने हर जिलाधिकारियों को दिये सख्त निर्देश

लखनऊ। सर्द रातों में उत्तर प्रदेश में कोई भी खुले आसमान में न सोने पाए, इसको लेकर सीएम योगी आदित्यनाथ के निर्देश के बाद

स्थानीय निकाय निदेशालय ने नगरीय निकायों में अपनी तैयारियां पूरी कर ली हैं। ठंड एवं शीतलहर को देखते हुए निदेशालय की ओर से सभी नगर आयुक्तों एवं अधिशासी अधिकारियों को निकायों में निराश्रित एवं दुर्बल वर्ग के आश्रयहीन व्यक्तियों के ठहरने, रुकने के लिए सुरक्षित स्थान प्रदान किए जाने और रैन बसेरों व शेल्टर होम्स के संचालन के संबंध में विस्तृत दिशा निर्देश दिए हैं। निदेशक डॉ नितिन बंसल द्वारा जारी पत्र में कहा गया है कि सभी नगरीय निकायों में रैन बसेरों/शेल्टर होम्स को मिशन मोड में सक्रिय किया जाए।

दिशा निर्देशों में बताया गया कि रैन बसेरा/शेल्टर होम्स में रुकने वाले व्यक्तियों को ठंड से बचाने एवं आवश्यक मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए समस्त उपाय (साफ-सफाई, स्वच्छ बेड शीट, कंबल, गरम पानी, शौचालय, प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था तथा सीसीटीवी आदि का प्रबंध किया जाए। रात में जनपद, निकाय के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा रैन बसेरों का औचक निरीक्षण किया जाए। रैन बसेरों के केयर टेकर के पास निरीक्षण रजिस्टर भी रखा जाए जिसमें निरीक्षण अधिकारी अपनी टिप्पणी भी अंकित करें। शीतलहर एवं ठंड से बचाव कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार-प्रसार भी किया जाए।

नोएडा में कोरोना के 2 नए मरीज मिले

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा में कोरोना फिर से पैर पसार रहा है। कोरोना का नया वेरिएंट लोगों को अपनी चपेट में ले रहा है। नोएडा में रविवार को दो और नए मरीज सामने आए हैं। दो नए मरीज मिलने से नोएडा (गौतमबुद्धनगर जनपद) में कोरोना पीड़ितों की संख्या तीन हो गई है। स्वास्थ्य विभाग की तरफ से पिछले 24 घंटे में 28 संदिग्धों की एंटीजन और आरटी पीसीआर जांच की गई है। रविवार को मिले दोनों संक्रमित मरीजों को फिलहाल होम आइसोलेशन में हैं और इनका इलाज चल रहा है। परिवार के किसी सदस्य में कोरोना के लक्षण नहीं होने के चलते उनकी कोरोना जांच नहीं कराई गई है। नोएडा समेत पूरे जनपद में कोविड को लेकर अलर्ट घोषित किया गया है।

राइजिंग यूथ सुपरस्टार्स में छात्राओं ने दिखाई प्रतिभा

नोएडा (चेतना मंच)। सत्यम फैशन इंस्टीट्यूट में राइजिंग यूथ सुपरस्टार्स ऑफ

इंडिया 2023 का आयोजन किया गया।

एसएफआई की प्रिंसिपल डॉ. वंदना जागलान व वाइस प्रिंसिपल डॉ. नीतू मल्होत्रा ने बताया कि एसएफआई ने न केवल एक विशेष शो का आयोजन किया बल्कि रचनात्मक रूप से मनोरंजक कार्यशालाओं और प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया। उन्होंने बताया कि हमने मिट्टी के बर्तनों की कार्यशाला, क्ले मॉडलिंग, फैशन टॉक शो प्रतियोगिता, कैनवास पेंटिंग प्रतियोगिता, सूखी मिट्टी प्रतियोगिता से लेकर नृत्य और संगीत प्रतियोगिता तथा अन्य कई गतिविधियों का आयोजन किया है।

सत्यम फैशन इंस्टीट्यूट ने अपने स्नातक संग्रह का एक मेगा फैशन शो आयोजित किया। इस कार्यक्रम में सभी विभागों के 45 से अधिक डिज़ाइन छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सत्यम ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस की चेयरपर्सन स्नेह सिंह, सचिव सीए प्रदीप गुप्ता ने छात्रों के काम की सराहना की और उन्हें भविष्य में इस कार्य के लिए इस जुनून और जोश को जारी रखने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में अतिथि कौशिक शील, हेमेंद्र गुप्ता, कुणाल सुद, आयोजक अंकित नगपाल, अनुभव अरोड़ा, फैशन डिजाइनर सोनिया जेटली, मोनिका आहूजा, हॉटमोंडे मिसेज इंडिया वर्ल्डवाइड 2021 के लिए सबटाइटल विजेता मिसेज ग्लैमरस और मिसेज इंडिया यूनिवर्स क्वारंटाइन क्वीन 2020 के लिए सबटाइटल विजेता मिसेज ग्लैमरस, गुरु शिखा खरे, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित शीर्ष ग्रेड कलाकार, भारत सरकार यूपी संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ, पीयूष वालिया संस्थापक न्यू ट्रेंड्ज़, पवन राज सिंह डायरेक्ट पीएनआई मीडियाकॉम, कीर्ति मिश्रा नारंग, संस्थापक कैटलिटिस, ने छात्रों के काम की सराहना की।